साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्द

चरण १०: २०१३-१४

कठपुतली नृत्य नाट्किा..... पृष्ठ - 19

कबीर उत्सव ..... पृष्ठ - 25

चरणदास चोर ..... पृष्ठ - 33

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'..... पृष्ठ - 38

जमनालाल बजाज की
१२५ वीं जयंती ..... पृष्ठ - 52

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वतः ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबादः शशिकांत, दीपक औहरी, मोहित जादोंन
शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141, फोनः (05676)234018
ई–मेलः shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com
वेबसाइट– www.shabdamhindi.com
मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइजिंग, मुंबई फोन– 022–22885114

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १०: २०१३-१४

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

(अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ.ओमप्रकाश सिंह

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंजर उल वासै

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 3

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

सातवां ग्रामीण कवि सम्मेलन 5
आठवां ग्रामीण कवि सम्मेलन 8
शिक्षक दिवस 11
हिन्दी संस्कृति सप्ताह 13
स्थापना दिवस 16

समन्वय / प्रायोजित कार्यक्रम

कठपुतली नृत्य नाटिका 19
ताज साहित्य 23
कबीर उत्सव 25
'बंसत मेलोडी' 28
सरोद वादन 30
चरणदास चोर 32

सतत् एवं स्थायी कार्यक्रम

शब्दम् 'बालिका–महिला पाठशाला' 34
विद्यादानम् महादानम् जागरूकता 35
शब्दम् 'बालिका–महिला सिलाई केन्द्र' 36
'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' 38
बहन बचाओ 40
महिला दिवस 42
प्रश्नमंच 43

विविधा

शिल्पा वेल्कर द्वारा चित्रकला प्रदर्शनी 47

सांस्कृतिक कार्यक्रम

रामनवमीं 48
गीता जयन्ती 50
जमनालाल बजाज की 125 वीं जयंती 52
युगीन काव्या 57

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अध्यक्षीय निवेदन

किसी शायर ने कहा है–

"सियासतों का मरम अहले सियासत जानें
मेरा पैगाम मुहब्बत है जहां तक पहुंचे।"

संगीत, साहित्य और कला मनुष्य के अनुराग, राग और संवेदना का संगम है।

सांस्कृतिक संस्थाओं का काम व्यक्ति को संवेदनशील बनाकर रचनात्मक ढंग से उसे भीतर से सशक्त करता है। संवेदनशील मजबूत व्यक्ति ही समाज और देश की सेवा और प्रगति कर सकता है।

इतिहास साक्षी है कि सत्ता की राजनीति के उद्देश्य दूरगामी नहीं हो सकते लेकिन कला, संगीत और साहित्य की संस्कृतियां युगों तक प्रभाव डालती हैं।

इसी भावना को ध्यान में रखते हुए दस वर्ष पूर्व 2004 में 'शब्दम्' का जन्म हुआ। अपने उद्देश्यों के अनुरूप साहित्य, संगीत एवं कला के प्रसार के लिए निरंतर कार्य करते हुए वर्ष 2014 में 'शब्दम्' ने दस वर्ष पूरे किये।

इस दस वर्षीय कार्यकाल में शब्दम के माध्यम से अनेक महान विभूतियों –साहित्यकारों, संगीतकारों और शीर्ष कलागुरुओं से व्यक्तिगत एवं संस्थागत

रूप से जुड़ने, सेवा करने और सीखने का जो अवर्णनीय अवसर मिला,उसके लिए मैं अपने आपको एवं शब्दम् संस्था को धन्य मानती हूँ।

हमने साहित्यिक–सांस्कृतिक तथा शिक्षण संस्थाओं के साथ मिलकर हिन्दी साहित्य, भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं कला के प्रसार के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, प्रायोजित कार्यक्रमों एवं सतत् गतिविधियों का संचालन किया। इनसे युवा पीढ़ी सहित समाज के अन्य वर्गो को अपने साहित्य–संस्कृति को जानने, समझने एवं जुड़ने का अवसर मिला।

दसवें स्थापना दिवस पर शब्दम ने देश–विदेश में भारतीय शास्त्रीय परम्परा को प्रसारित करने में अमूल्य योगदान देने

वाली संस्था 'स्पिक मैके' एवं उसके संस्थापक/अध्यक्ष को "संस्कृति सम्मान" देकर "संगीत–कला की भारतीय परम्परा" को सम्मानित किया।

मेरा मानना है कि प्रकृति एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं और इसका संरक्षण एवं संवर्धन विश्व के प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। विश्व का कोई भी देश इन दोनों के अस्तित्व के बिना रह नहीं सकता और न ही आगे बढ़ सकता है। अतः ज़रूरत इस बात की है कि शिशु–कक्षा से ही शिक्षण संस्थाओं में संगीत, नाटक, कविता, कहानी, विविध कलाओं एवम् पर्यावरण सम्बन्धी कार्यशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मध्य उनकी रुचि एवं रचनात्मक शक्ति का विकास कर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए।

शब्दम् का दसवां अंक आपके सामने है। आशा है आप अपने रचनात्मक सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएंगे जिससे हमें आगे बढ़ने का मागदर्शन और सम्बल मिलेगा।

शब्दम् की इस दसवर्षीय यात्रा में संस्था के न्यासी मंडल के सम्मानित सदस्यगण प्रो. नन्दलाल पाठक, श्री उदयप्रताप सिंह, श्री मुकुल उपाध्याय एवं श्री शेखर बजाज के विशेष सहयोग के बिना यहां तक पहुँचना संभव नहीं था। इसमें एक महत्वपूर्ण नाम न्यूजीलैंड में सहयोग कर रही प्रवासी भारतीय श्रीमती सुदीप्ता व्यास का है जो शब्दम को विदेशी धरा पर स्थापित करने का अमूल्य कार्य कर रही हैं।

शब्दम् परिवार के सलाहकारों– श्री उमाशंकर शर्मा, डा. ओमप्रकाश सिंह, डा.ए.के. आहूजा, श्री मंजर उल वासै, डा. रजनी यादव, डा. महेश आलोक एवं श्री अरविन्द तिवारी का हृदय से आभार मानती हूँ जिनका अनवरत सहयोग मिलता रहा है।

इस यात्रा में हमारा साथ निभाने वाली अनेक सहयोगी संस्थाएं जैसे– टचस्टोन एडवरटाइज़िंग मुम्बई, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ. प्र. हिन्दी संस्थान, स्पिक मैके, सहेज फाउंडेशन, लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट, वर्धा, प्रयास–न्यूजीलैंड सहित फिरोजाबाद जनपद एवं अन्य स्थानों के सहयोगी शिक्षण संस्थाओं का आभार प्रकट करती हूँ।

बजाज समूह, मीडिया मित्रों, हिन्द लैम्प्स परिवार के सदस्यों तथा शब्दम्–पर्यावरण मित्र के कर्मठ कार्यकताओं सहित अन्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी सहयोगियों एवं संस्थाओं का अंतस से आभार प्रकट करती हूँ।

सहयोग देने वाले सभी प्राचार्यों, संस्कृति प्रेमियों, विद्यार्थियों एवं समस्त पाठकों का आभार प्रकट करती हूँ।

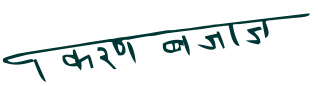

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

'सत्ता की उस राजवधू को लूटा पहरेदारों ने' सातवां ग्रामीण कवि सम्मेलन

''जो उलझ कर रह गयी है फाइलों के जाल में, गांव तक वो रोशनी आएगी कितने साल में।''

अदम गोंडवी की ये पंक्तियां हमारे गांवों में विकास की अनुपस्थिति को दर्शाती हैं। गांवों में भौतिक विकास से ज़्यादा सांस्कृतिक विकास की कमी होती जा रही है।

19 जनवरी 2014 को ग्रामीण कवि सम्मेलन का सातवां आयोजन जूनियर हाईस्कूल, ग्राम कंथरी में किया गया। मुरैना (मध्यप्रदेश) के बीहड़ क्षेत्र से आए कवि राजवीर सिंह भारती ने नई पीढ़ी के बिगड़े संस्कारों के संबंध में अपनी कविता के माध्यम से कहा कि टीवी और मोबाइल फोन बच्चों का दुश्मन बन गया है। यह बीमारी अब शहर से गांवों में भी पहुंच गई। ओजस्वी कवि कुलदीप 'अंगार' ने देश प्रेम की भावना को कुछ इस प्रकार स्वर दिये, 'जिसका प्रतिदिन अभिषेक किया वीरों की रक्त फुहारों ने, सत्ता की उस राजवधू को लूटा पहरेदारों ने।'

गीतकार डॉ. राकेश सक्सेना ने कहा, 'नई सदी के दौर का ये मनचला मिज़ाज है, राम जाने ये किस तरफ जा रहा समाज

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए कवि बी.एस.ए. डॉ. जितेन्द्र सिंह यादव।

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए
कवि सुरेन्द्र सार्थक।

है। खान–पान चाल–ढाल पश्चिमी लिबास है, चमक–दमक की जिंदगी है, भोग है विलास है।'

राजस्थान के अलवर जिले से आए कवि सुरेन्द्र सार्थक ने बेटियों को बचाने के लिए एक मार्मिक कविता का पाठ करके उपस्थित जनसमुदाय को सोचने पर विवश कर दिया। कविता पाठ करते हुए श्री सार्थक ने कहा, 'उन दृश्यों को देखकर मेरी अंतरात्मा रोती है, कराहती है। बाबू, एक कन्या ऐसा नसीब लेकर क्यों आती है।'

एक अन्य रचना में उन्होंने कहा 'सच्चाई का हथौड़ा मुकद्दर में सितारे जड़ भी सकता है, अगर हो नीयत में खोट तो उल्टा पड़ भी सकता है।'

महिलावर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए कवयित्री सुधा अरोड़ा ने न्यौछावर हो गई वीरांगनाओं की स्मृतियों को प्रस्तुत कर उपस्थित युवाओं एवं युवतियों के हृदय में

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए
कवि कुलदीप अंगार।

देशप्रेम के भावों को भरा। उन्होंने कविता प्रस्तुत की – 'देवभूमि पै मैं वीर बेटियों का वंश हूँ, लक्ष्मीबाई पद्मिनी का मैं भी एक अंश हूँ।'

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह ने ग्रामीणों के बीच कविता के संस्कार पैदा करने के लिए अपने काव्यपाठ में कहा – ''परतंत्रता के अभिमान को भुलाने हेतु, राष्ट्रीयता का स्वाभिमान भी जरूरी है। किंतु अब भी अंग्रेजी को निज भाषा जो मानते हैं, उनके

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करती हुई
कवयित्री सुधा अरोड़ा।

डीएनए की पहचान भी जरूरी है।''

संस्था के न्यासी प्रो. नंदलाल पाठक द्वारा भेजी गई पंक्तियों– ''जिस भूमि पर मस्तक उठाए चल रहा हूं मैं, हो उस धरा की गोद में अंतिम शयन मेरा' ने देश के प्रति भावना का प्रसार किया।

आयोजन के सहयोगी लक्ष्मीनारायण यादव ने श्री उदयप्रताप सिंह एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित बीएसए डॉ. जितेन्द्र सिंह यादव का स्वागत किया। ग्राम प्रधान बंगाली लाल एवं हिन्द लैम्पस् के ईडी बी बी मुखोपाध्याय ने कवियों एवं शब्दम् सलाहकारों का स्वागत किया। शब्दम् सलाहकार डॉ. महेश आलोक ने अंत में सभी का आभार प्रकट किया।

भीषण शीत में पूरे उत्साह के साथ आसपास के गावों से सैकड़ों लोग कविता के माध्यम से सामाजिक विडम्बनाओं की सच्चाइयों को जानने के लिए पहुंचे। चरित्र निर्माण और देश प्रेम को समर्पित कविताओं ने कड़ाके की ठंड में मौजूद जनसमुदाय को झकझोर दिया।

कवि सम्मेलन का आनंद उठाते हुए सुधी श्रोतागण।

कवि सम्मेलन का आनंद उठाते हुए स्कूलों के बच्चे।

''सत्ता की राजवधु को लूटा पहरेदारों ने...''

* शब्दम द्वारा आयोजित गोष्ठी में दिया हिंदी के उत्थान पर बल

संवाद सहयोगी, शिकोहाबाद : शब्दम द्वारा आयोजित सातवें ग्रामीण कवि सम्मेलन में सम सामयिक रचनाएं गूंजी। ग्राम कंथरी के जूनियर हाईस्कूल में चरित्र निर्माण एवं देश प्रेम को समर्पित कविताओं ने सर्द मौसम में भी लोगों को झकझोर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां शारदे के पूजन एवं वंदना के साथ हुआ। संस्था अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा भेजे गए संदेश में कविता के द्वारा भाषा एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार की जानकारी दी। काव्य पाठ करते हुए कवि कुलदीप अंगार ने कहा ''जिसका प्रतिदिन अभिषेक किया वीरों की रक्त फुहारों ने, सत्ता की उस राजवधू को लूटा पहरेदारों ने...।'' वहीं गीतकार डॉ. राकेश सक्सेना ने कहा ''नई सदी के दौर का यह मनचला मिजाज है, राम जाने किस तरफ जा रहा समाज है...'' सुरेन्द्र सार्थक ने कविता के माध्यम से बेटी बचाओ का संदेश दिया। राजवीर सिंह भारती ने संस्कारों से विमुख होती पीढ़ी पर कुछ यूं पढ़ा ''मोबाइल बच्चों का दुश्मन बन गया है...''। कवियत्री सुषमा अराध्य ने कहा ''देवभूमि पर मैं वीर बेटियों का वंश हूं, लक्ष्मीबाई पद्मिनी का मैं भी एक अंश हूं।'' अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने ग्रामीणों के बीच कविता के संस्कार पैदा करने के लिए शब्दम् द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए संदेश दिया ''परतंत्रता के अभिमान को भुलाने हेतु, राष्ट्रीयता का स्वाभिमान जरूरी है। अब भी अंग्रेजी को निज भाषा जो मानते हैं, उनके डीएनए की पहचान भी जरूरी है।'' लक्ष्मीनारायण यादव ने उदय प्रताप सिंह सहित बीएसए डा.जितेंद्र सिंह यादव का सम्मान किया। ग्राम प्रधान बंगाली लाल एवं हिन्दलैम्प्स के ईडी बीबी मुखोपाध्याय ने कवियों एवं शब्दम् सलाहकारों का स्वागत किया। मुकेश मणिकांचन, अरविंद तिवारी, उमा शंकर शर्मा, डा.असीम यादव, डॉ. रजनी यादव, डॉ. महेश आल[illegible] उपस्थित थे।

काव्य पाठ करते उ.प्र. हि[illegible] अध्यक्ष उदय प्रताप सिं[illegible]

राष्ट्रीयता का स्वाभिमान भी जरूरी है

कवि सम्मेलन

[illegible]

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

''माटी से कर ले प्यार, नर जन्म न मिले हजार''

शब्दम् आठवां ग्रामीण कवि सम्मेलन

शब्दम् ने 21 दिसम्बर 2014 को सिरसागंज स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में आठवां ग्रामीण कवि सम्मेलन आयोजित किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वाग्देवी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उप जिलाधिकारी श्री रवीन्द्र कुमार ने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यह आपका सौभाग्य है कि कविता खुद चल कर आपके विद्यालय तक आयी है, आप अगर शान्ति से कविता सुनेंगे तो बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

अपने अनुशासन एवं विद्वता के लिए प्रशंसित केन्द्रीय नवोदय विद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुमनलता द्विवेदी ने बच्चों के मध्य हिन्दी क्षेत्र में अग्रणी संस्था शब्दम् के साथ मिलकर इस कवि सम्मेलन का आयोजन किया।

जवाहर नवोदय विद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमनलता द्विवेदी ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि शब्दम् एवं जवाहर नवोदय विद्यालय के इस अनुपम प्रयास से नई पीढ़ी को भाषा एवं संस्कृति के संस्कार से जुड़ने एवं उनको प्रसारित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। यह बहुत ही सुखद

'गाम के गंवार, हम तो' काव्यपाठ करते श्री वरुण चतुर्वेदी।

'कविता चली गांव की ओर' प्रस्तुत करते श्री उमाशंकर राही।

'वीर रस' प्रस्तुत करते डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया।

संयोग है।

श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा ''हमारी मातृभाषा हिन्दी, जो जन–जन को जोड़ने की भाषा है, उसको बोलना, समझना, लिखना और पढ़ना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि अपनी ही भाषा में हम मन की बात कह सकते हैं और मनों को जोड़ भी सकते हैं साथ ही संस्कृति का विकास कर सकते हैं।''

शब्दम् उपाध्यक्ष प्रो. नंदलाल पाठक ने अपने संदेश में कहा, 'भारतीय जीवन का सौंदर्य अभी भी नगरों की अपेक्षा गाँवों में अधिक सुरक्षित है। अभी भी आप प्रकृति के निकट हैं। ऋतु–परिवर्तन शहरों में नहीं होता। हरियाली जितनी यहां मिलती है उतनी सीमेंट के जंगलों में कहां से होगी।'

श्री अरविन्द तिवारी ने राष्ट्रभक्ति गीत के साथ 'सरकारी अस्पताल और गणित के सवाल' जैसी हास्य व्यंग्य कविताओं के माध्यम से जहाँ उपस्थित छात्र–छात्राओं को हँसाया वहीं डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने बच्चों को भगत सिंह, राजगुरू, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस जैसे देशभक्तों के बलिदानों को कविता के माध्यम से प्रस्तुत कर देशभक्ति की भावना जागृत की और भीष्म पितामह एवं जटायु प्रसंग के माध्यम से स्त्री सुरक्षा एवं कर्तव्यों का बोध कराया।

वृन्दावन से पधारे कवि श्री उमाशंकर 'राही' ने अपनी रचना ''जब से लगी डिशें शहरन में, कविता चली गांव की ओर..... डनलप के गद्दों ने तोड़ी हथकरघा की डोर.....'' के माध्यम से केबल टी. वी. पर प्रहार करते हुए दर्शाने का प्रयास किया कि आज किताबों एवं कविता की जगह लोगों की रुचि टी.वी. में अधिक हो गयी है।

भरतपुर राजस्थान से पधारे श्री वरुण चतुर्वेदी की रचना ''माटी से कर ले प्यार, नर जन्म न मिले हजार.....मेरे प्यारे भइया

मानों माटी की मनुहार '' गीत सुनाकर ग्रामीणों के मन तक पहुँचने का प्रयास किया। उन्होंने ब्रजभाषा के कई गीत पढ़े। नवोदय विद्यालय के छात्र विपिन हिन्दुस्तानी ने भी भ्रष्टाचार एवं सामाजिक कुरीतियों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से करारा प्रहार किया, जिसका लोगों ने खूब आनन्द उठाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री उमाशंकर शर्मा ने एवं संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया।

जवाहर नवोदय विद्यालय के आस–पास के गांव गुरैया सोयलपुर, शेरपुर, केशवपुर, किरावल, बहादुरपुर के ग्रामीणजन बड़ी संख्या में कविता रसास्वादन हेतु उपस्थित

काव्यपाठ का आनन्द लेते श्रोतागण।

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

''शिक्षक तो राष्ट्र निर्माताओं का भी निर्माता है।''

बच्चों की नींव रखने वाले शिक्षकों का सम्मान

शिकोहाबाद में शिक्षक सम्मान समारोह एवं 'शिक्षक ही है सुदृढ़ देश निर्माता' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया।

शब्दम् संस्था द्वारा इस वर्ष भी देश के भावी पीढ़ी के निर्माता शिक्षक का सम्मान किया गया। इस श्रृंखला में प्राइमरी एवं इण्टर स्तर के तीन शिक्षकों क्रमशः वीरेन्द्र सिंह चौहान, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय नगला टपुआ, तहसील सिढ़पुरा, कासगंज, डा. राजेन्द्र कुमार तिवारी, सेवानिवृत्त प्राचार्य, पार्वती राष्ट्रीय इण्टर कालेज सिढ़पुरा, कासगंज एवं सुश्री रेखा शर्मा उपप्रधानाचार्य, ज्ञानदीप विद्यालय, शिकोहाबाद को शॉल, नारियल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डा. आर.के. सिंह को भी शॉल पहनाकर उनका स्वागत किया गया।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के संदेश में कहा गया ''जिस प्रकार आज पूरा देश रूपये के अवमूल्यन को लेकर चिंतित है, उसी प्रकार मेरी चिंता चरित्र के अवमूल्यन को लेकर है। नैतिकता के अवमूल्यन की गति शून्य से भी नीचे गिरती जा रही है।

''इस परिस्थिति को हल करने के लिए देश को नेताओं से अधिक राष्ट्र निर्माताओं की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माताओं की पूर्ति सिर्फ शिक्षक ही कर सकता है, क्यों कि शिक्षक तो राष्ट्र निर्माताओं का भी निर्माता है।''

मुख्य अतिथि का सम्मान करती सलाहकार समिति।

सम्मानित शिक्षकों की श्रृखंला में अपना वक्तव्य देते हुये श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी ने कहा ''मैंने अपने जीवन काल में कभी ट्यूशन नहीं पढ़ाया है। मेरा मानना है कि ट्यूशन ही शिक्षा के पतन का मुख्य कारण है। मेरा विषय अंग्रेजी जरूर है परन्तु मैं इसका प्रयोग तभी करता हूँ जब सामने वाला हिन्दी न जानता हो।'' तिवारी शिक्षक संघ के लिए कई बार जेल भी गए।

इसी क्रम में वीरेन्द्र सिंह चौहान ने कहा ''शिक्षक का दायित्व केवल विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम रटाना ही नहीं बल्कि उस पाठ्यक्रम से छात्रों ने क्या सीखा, इसका आंकलन करना भी जरूरी है। विद्यार्थी अध्यापक के दर्पण होते हैं। विद्यार्थी के ज्ञान से ही शिक्षक की पहचान की जा सकती है। विद्यालय एक उपवन है जिसमें विद्यार्थियों की लाइन उसकी क्यारी और छात्र फूल हैं, जिसे एक माली रूपी शिक्षक अपने ज्ञान और तप से सींचता है।''

सुश्री रेखा शर्मा ने कहा ''शिक्षक को जब उसके कार्य के लिए सराहा जाता है तब उसे और अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।'' साथ ही उन्होंने कहा कि सफलता की एक–एक सीढ़ी चढ़कर जब हम सफलता पाते हैं तो इसके बारे में बच्चों को अवश्य बताना चाहिए और सफलता के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि आज तक जो विद्यार्थी उनके सानिध्य में आए उनको, उन्होंने हमेशा ईमानदारी और श्रेष्ठता का पाठ पढ़ाया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आदर्श कृष्ण महाविद्यालय के प्राचार्य डा. आर.के.सिंह ने कहा, 'आज शिक्षा पतन के लिए मुख्य रूप से नकल एवं स्ववित्तपोषित संस्थान जिम्मेदार हैं। नकल द्वारा दी जा रही शिक्षा का कोई भविष्य नहीं होता, नकल द्वारा पास विद्यार्थी आगे चलकर यदि शिक्षक बनेंगे, तो सोचिए कि वे अपने छात्रों को क्या सिखाएंगे। समाज के नैतिक पतन का कारण शिक्षा के स्तर में गिरावट है। कालेज में आने वाला प्रत्येक विद्यार्थी मेरे लिए पुत्र–पुत्री समान है।'

सम्मानित शिक्षकगण।

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

''हिन्दी को रोजगार परक बनाने के लिए लचीलापन अपनाना होगा''

हिन्दी दिवस

शब्दम् के वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृखंला में वर्ष 2014 हिन्दी दिवस पर हिन्दी के तिरासी मेधावी छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले छात्रों में इण्टरमीडिएट और स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षाओं के ऐसे छात्र–छात्राएं थे, जिनके हिन्दी विषय में इण्टरमीडिएट में 80 प्रतिशत व स्नातक, स्नातकोत्तर में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक थे।

कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं का उत्साह शीर्ष पर था, हिन्दी के लिए सम्मान प्राप्त करने पर सभी छात्र–छात्राओं के चेहरे पर हर्शोल्लास और गौरव का भाव स्पष्ट था और उनके शिक्षक भी खुद को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे।

प्रत्येक छात्र इस संकल्प के साथ मंच पर आ रहा था कि वह अपने शिक्षकों से प्राप्त हिन्दी की इस शिक्षा के माध्यम से अपने भविष्य को तथा भारत को नई ऊंचाईयों पर पहुँचाएगा।

श्री उदयप्रताप सिंह ने अपने संदेश में कहा, ''हिन्दी रोजगार परक भाषा कैसे बन सकती है यह एक बहुत ही गम्भीर विषय है। इसके लिए हमें हिन्दी को सूचना प्रोद्यौगिकी से जोड़ना होगा। हमें हिन्दी को रोजगार परक बनाने के लिए लचीलापन अपनाना होगा, हमें तकनीकी शब्दों को यथावत हिन्दी शब्दकोश में लेना होगा, जैसे– अगर हम कार की बात करें तो गेयर, क्लच, ब्रेक ये सब अंग्रेजी के तकनीकी शब्द हैं, जिनके लिए हिन्दी में कोई भी शब्द नहीं हैं। हमें लचीलापन

सम्मानित छात्र–छात्राएं।

दिखाते हुये इन शब्दों को हिन्दी शब्दकोश में ले लेना चाहिए। हमें अन्य भारतीय भाषाओं को भी हिन्दी के साथ लेकर चलना होगा।

''आज अंग्रेजी बोलना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है, अगर हम अंग्रेजी को हटाकर हिन्दी को प्रतिष्ठा से जोड़ लें, तो निश्चित रूप से हिन्दी रोजगार परक भाषा बन सकती है।

''मेरा व्यक्तिगत मत है कि आज भारत के व्यवसाय में विदेशियों की रुचि को देखते

छात्र को 'सम्मान पत्र' देते हुए मुख्य अतिथि।

हुए, हिन्दी का भविष्य बहुत उज्जवल है, क्योंकि जो भी व्यक्ति भारत से व्यवसाय करेगा उसे हिन्दी का ज्ञान लेना होगा।

''चाहे जो हो धर्म तुम्हारा, चाहे जो वादी हो। नहीं जी रहे देश के लिए गर तो अपराधी हो।''

प्रो नंदलाल पाठक ने अपने संदेश में कहा ''मानवता की सबसे बड़ी सम्पत्ति भाषा है। भाषा मनुष्य से मनुष्य को जोड़ती है। भारत के विभिन्न प्रदेशों को हिन्दी जोड़ती रही है। भाषाओं के बीच पुल बनाती रही है, हिन्दी दिवस को हम हिन्दी भाषी लोग भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाएं तो हमें अन्य भारतीय भाषाओं का स्नेह और आदर मिलेगा, भाषा का मामला बहुत नाजुक होता है, विदेशी नेता हमारे देश में आकर, हिन्दी बोलकर हमारा दिल जीत लेते हैं। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जहां जाते हैं, वहां की भाषा से प्रारम्भ करते हैं।

''हम लोग वाग्देवी की पूजा करते हैं और वाणी के उपासक हैं। हमें सारे विश्व में हिन्दी को लोकप्रिय बनाना है। इसके लिए हमें अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करना होगा।''

कार्यक्रम के प्रारम्भ में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा, ''हिन्दी भारत के जन–जन को जोड़ने की भाषा है। भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए हिन्दी को हर क्षेत्र में सम्मान और स्थान देना होगा। अक्सर हम अपनी विषमताओं और विफलताओं का दोष हिन्दी को देने लगते हैं। सफलता की ऊंचाइयाँ छूने के लिए आपकी पकड़ अपने विषय के ज्ञान पर आधारित होना जरूरी है। अपनी अल्पज्ञता का दोष किसी भाषा को नहीं दिया जा सकता। अब उसके उचित मानसम्मान के लिए भी हमी को प्रयास करने होंगे, क्योंकि इसके लिए कोई विदेशी नहीं आएंगे, अगर हमारा ज्ञान सक्षम है, तो हिन्दी में उस ज्ञान को लिखने

बोलने और समझाने की पूरी क्षमता है। आवश्यकता है अपने ज्ञान को और सुदृढ़ बनायें।''

छात्र सम्मान कार्यक्रम के साथ ''हिन्दी रोज़गारपरक भाषा कैसे बने ?'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विचार रखते हुए मुख्यवक्ता डा. महेश आलोक ने कहा कि "आज की हिन्दी को मीडिया ने सबल बना दिया है और कम्प्यूटर से जुड़ने के बाद आज की हिन्दी पूरे विश्व में पहुँच गई है।"

डा. आर. के सिंह ने कहा कि हिन्दी के छात्र–छात्राओं को हिन्दी से रोजगार प्राप्त करने के लिए हिन्दी के उच्चस्तरीय ज्ञान के साथ–साथ, अंग्रेजी का भाषायी ज्ञान भी लेना होगा।

मुख्य अतिथि श्री उमाशंकर शर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों से निवेदन करते हुए कहा कि वह हिन्दी के माध्यम से छात्र–छात्राओं में संस्कारों के बीज भर दें और ये संस्कार स्वतः ही हिन्दी को रोजगार परक भाषा बना देंगे।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन श्री मंज़र उल–वासै ने किया।

शब्दम् ने किया मेधावियों को सम्मानित

कार्यक्रम

83 छात्र-छात्राओं को मिला सम्मान

कल्पतरु समाचार सेवा

शब्दम ने किया मेधावी बच्चों का सम्मान

हिन्दी दिवस पर सम्मान समारोह कार्यक्रम में सभागार में उपस्थित श्रोता

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

'शब्दम्' दशम् स्थापना दिवस समारोह

शब्दम् ने अपने दसवें स्थापना दिवस पर स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी लाभ निरपेक्ष संस्था 'स्पिक मैके' के संस्थापक डा. किरण सेठ को 'संस्कृति सम्मान–2014' से सम्मानित करते हुए सम्मान पत्र, अंगवस्त्रम् एवं श्रीफल भेंट किया।

स्पिक मैके का मुख्य उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक परम्परा से उसके मूल रूप में परिचित कराना है, जिसमें सांस्कृतिक धरोहरों के विभिन्न आयामों–शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य, लोक संगीत एवं नृत्य, योग, हस्तशिल्प, नाटक एवं चलचित्र आदि की एक साथ भिन्न–भिन्न शैक्षणिक संस्थानों में व्याख्या प्रस्तुतियों का आयोजन करना एवं युवावर्ग को कला एवं कलाकारों से रूबरू कराना है।

समारोह में 'कला एवं संगीतः साहित्य के अभिन्न अंग' विषय पर डा. सेठ ने प्रारम्भ से अपने ऊपर किए हुए प्रयोगों को समारोह में उपस्थित विद्वत्जनों से साझा किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार हम शास्त्रीय संगीत के रागों से उपजी, रागों से पूर्ण ध्यान की अवस्था में पहुंचकर अपने किसी भी कार्य को सफलता से सम्पन्न

किरण सेठ को सम्मान पत्र भेट करते शेखर बजाज एवं किरण बजाज, साथ में 'शब्दम्' एवं 'स्पिक मैके' की टीम।

कर सकते हैं।

उन्होंने सभा में उपस्थित विद्यालयों से निवेदन किया कि वह शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम नर्सरी कक्षा से ही प्रारम्भ करें, ताकि बच्चे अपने शिक्षा जीवन के प्रारम्भ से ही इन गुणों का लाभ ले पाएँ।

श्री सेठ ने बताया कि किस प्रकार नार्वे, भारतीय स्कूली छात्रों को शास्त्रीय संगीत सीखने के लिए अनुदान दे रहा है। वह यहां के शास्त्रीय कलाकारों को अपने स्कूलों में बुलाकर भी छात्रों को शास्त्रीय संगीत सिखा रहा है, परन्तु जब हम भारत के स्कूलों में जाकर शास्त्रीय संगीत का एक कार्यक्रम कराने के लिए कहते हैं तो स्कूल आसानी से तैयार नहीं होते, यह अपने आप में एक चिंता का विषय है।

श्री सेठ ने कहा कि हम 'स्पिक मैके' के कार्यक्रमों को जन आन्दोलन के माध्यम से प्रत्येक छात्र तक पहुंचना चाहते हैं।

शब्दम् अध्यक्ष ने दसवें स्थापना दिवस पर समारोह में उपस्थित विद्वतजनों को 'शब्दम् एक यात्रा–2004–2014' पॉवर पोइन्ट प्रजेंटेशन दिया। जिसमें शब्दम्

सभा को सम्बोधित करती 'शब्दम्' अध्यक्ष किरण बजाज।

द्वारा संचालित सभी गतिविधियों के बारे में बताया।

'शब्दम्' अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा "आज के आधुनिक तनावपूर्ण और विकृत वातातरण में साहित्य–संगीत–कला की जरूरत पहले से कई गुना अधिक बढ़ गई है।

"इसलिए यह नितांत आवश्यक हो गया है कि देश के बचपन की पौध को कला की जीवन्त माटी, साहित्य की अमूल्य खाद, संगीत का अमृत जल और भारतीय संस्कृति की शुद्ध बयार का वातावरण मिले जिससे उनका व्यक्तित्व 'कल्पवृक्ष' की तरह पुष्पित–पल्लवित हो सके।"

कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए डा. महेश आलोक ने मंच और सुधी श्रोताओं के मध्य बेहतरीन एवं सार्थक

समारोह में पद्मश्री पुरस्कार विजेता का हुआ स्वागत

बच्चों के संस्कारित होने के लिए हिन्दी का विकास जरूरी: किरन सेठ

स्पिक मैके के संस्थापक का सम्मान आज

शिकोहाबाद(ब्यूरो)। शब्दम संस्था साहित्य, संगीत व कला के क्षेत्र में पिछले दस वर्षों से कार्य कर रही है। उच्च स्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देने के लिए संस्था प्रयासरत है।

टीवी से 'संस्कार' सीख रहे हैं बच्चे: किरन सेठ

शिकोहाबाद | हिन्दुस्तान संवाद

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार रखते हुए डॉ. किरन सेठ। • हिन्दुस्तान

आयोजन

• हिंद लैम्प्स में शब्दम के स्थापना दिवस को धूमधाम से मनाया गया

• बीडीएम महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया

शब्दम् कला के क्षेत्र में कर रही कार्य: किरण बजाज

भाषा की गहराई में जाने की जरूरत

युवा पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने चाहिए: डा. किरण सेठ

अमर उजाला ब्यूरो

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

कठपुतली का खेल
शैतान भेड़िये से कैसे बचा नन्हा मोमिन

'स्पिक मैके', 'शब्दम्' और ज्ञानदीप सीनियर सैकेंडरी पब्लिक स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में 6 दिसंबर 2013 को विश्वविख्यात कोलकाता पपेट थियेटर के कलाकारों ने कठपुतली खेल के द्वारा नई पीढ़ी को एकता का मूल्य समझाया। शैतानी ताकतें हर समुदाय और हर समय में मौजूद रही हैं। किसी साधारण व्यक्ति के पास इन ताक़तों को पराजित करने के लिए सबसे कारगर माध्यम है, एकजुटता और कुशल रणनीति।

ज्ञानदीप विद्यालय में हुए कठपुतली के खेल में भेड़िये और मेमने की चर्चित लोककथा को गहन नाट्य संप्रेषणीयता के साथ प्रस्तुत किया गया। कठपुतली के कौतूहलजनक आकार–प्रकार, दृष्य संयोजन एवं सटीक संचालन ने प्रस्तुति में बेहतर प्रभाव क़ायम किया। आवश्यकतानुरूप संगीत एवं ध्वनियों ने विशेष प्रभाव की सृष्टि की। सबसे अधिक प्रभावित किया कथोपकथन और उनकी शैली ने। मोमिन की बालसुलभ चेष्टाएं और मधुर बोली एवं बुद्धि कौशल ने विद्यार्थी, शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं अन्य

लवकुश की प्रस्तुति के दौरान सीता के पुत्रों को दुलारते हुए ऋषि वाल्मीकि।

पपेट शो में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज का स्वागत करते हुए विद्यालय की डॉयरेक्टर डॉ रजनी यादव।

सभी दर्शकों को मनोरंजन से प्रभावित किया।

मोमिन की कहानी ने यह संदेश दिया कि बुद्धि, विवेक और प्रबंधकीय कौशल एकजुटता का प्रयोग करके विपत्ति की स्थिति से कैसे निबटा जा सकता है। एक अन्य प्रस्तुति में रामायण के प्रसिद्ध बाल पात्र लव और कुश की कहानी के माध्यम से मूल्य, आदर्श एवं कौशल की सीख भी दी गयी।

बहादुर मोमिन की कहानी

एक थी भेड़ और एक था उसका नन्हा सा मेमना 'मोमिन'। दोनों जंगल में आराम से रहते थे। एक दिन मोमिन की मां को अपनी रिश्तेदारी में जाना था। रिश्तेदार का गांव कुछ दूर था। इसलिए उसे रात को लौटने में देरी हो सकती थी अथवा वहां रुकना पड़ सकता था।

मां ने यह बात मोमिन को बतायी। मां के जाने की बात सुनकर मोमिन थोड़ा उदास हो गया। मां ने उसे समझाया कि यदि एक दिन वह अकेले ही घर की ज़िम्मेदारी सँभालेगा तो वह उसके लिए सुंदर उपहार लेकर आयेगी।

मोमिन ने मां की बात मान ली। मां ने उसे सुरक्षा से रहने की हिदायत दी और चल पड़ी। जाते–जाते मां ने कहा कि नदी से पानी भर कर ज़रूर रख लेना, वह पूरी कोशिश करेगी कि रात को ही वापस आ जाये।

अकेला मोमिन कुछ देर घर में खेलता रहा। एकाएक उसे मां का आदेश याद आया। उसने पानी के दो बर्तन उठाये और चल दिया नदी की ओर। फूल और

मेमने और भेड़िया में जुबानी जंग का एक दृश्य।

तितलियों से अठखेलियां करता हुआ वह नदी के तट पर जा पहुंचा। प्रकृति के सौंदर्य के मध्य पानी की कल–कल ध्वनि सुनकर वह प्रफुल्लित हो गया। उसे नदी की धारा में कुछ गहरे तक घुस कर छपाक–छपाक की ध्वनि करने में बड़ा मज़ा आया।

जलक्रीड़ा के पश्चात बर्तन भर कर वह जैसे ही तट से ऊपर की ओर चला, एक भेड़िये की गुर्राहट को सुनकर उसके कदम रुक गये। सामने से आ रहा भेड़िया मोमिन से धूर्ततापूर्वक बोला, ''इस नदी का पानी मेरा है और मेरी मर्जी के बिना यह पानी कोई नहीं ले सकता। जिसने यह अपराध किया है उसे सजा मिली है।'' भेड़िये ने उससे कई कुटिल प्रश्न पूछे। मोमिन ने निडर होकर उनका उत्तर दिया। अंत में भेड़िया ने धमकी दी कि वह रात को उसे खा जाएगा।

धमकी सुनकर नन्हें मोमिन का कलेजा कांप गया। रोता–बिलखता वह घर की ओर चल दिया। रास्ते में एक बिल्ली ने उससे रोने का कारण पूछा। मोमिन ने अपने बुद्धिमानीपूर्ण तर्कों के साथ भेड़िये की धमकी के बारे में बिल्ली को बताया। पूरी बात सुनकर बिल्ली गुस्से से लाल–पीली हो गई। उसने मोमिन की बहादुरी की प्रशंसा की और कहा कि वह शाम होते ही उसके घर आ जायेगी। वह स्वयं को अकेला न समझे। इसी तरह चलते–चलते उसे कुत्ता, घोड़ा और हाथी मिले। सभी ने मोमिन को धैर्य बंधाया और शाम होते ही मोमिन की सुरक्षा के लिए उसके घर आने का आश्वासन दिया।

मोमिन को जंगल के इन शुभचिंतकों से काफी तसल्ली हुई। लेकिन घर पहुंच कर भी उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उसे मां की याद आने लगी। शाम को अँधेरा

कोलकाता पपेट थियेटर की टीम।

होने के साथ ही कई कदमों की आहट से चौंक कर मेमने ने खिड़की से बाहर झांका तो देखा कि उसके शुभचिंतक चले आ रहे हैं। वे सभी घर के अंदर छिप गये।

चंद्रमा जैसे जैसे आकाश में शीर्ष की ओर कदम बढ़ा रहा था, वैसे–वैसे धूर्त भेड़िया मोमिन के घर की ओर बढ़ा चला जा रहा था। दरवाज़े पर पहुंच कर उसने आवाज़ दी। कोई प्रत्युत्तर न पाकर वह मन ही मन हँसने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसका शिकार सहम कर छिप गया है और विरोध करने की स्थिति में नहीं है। वह निश्चिंत हो गया कि अब उसका रास्ता साफ़ है।

लेकिन भेड़िये की यही निश्चिंतता उसकी पराजय का कारण बन गई। बिना कोई मौका दिये बिल्ली और कुत्ते ने उस पर हमला बोल दिया। वह सँभल कर उनका मुकाबला करने को तैयार हुआ तो घोड़ा और हाथी ने मोर्चा खोल दिया। घोड़े की दुलत्तियों ने उसकी पसलियां तोड़ दीं। इसके बाद हाथी के मजबूत पैर की ठोकर ने उसे फुटबॉल की तरह हवा में उछाल दिया।

''मोमिन ओ मोमिन, हमने तुम्हारे दुश्मन को सबक सिखा दिया। अब वह तुम्हें कमजोर समझने की कभी भूल नहीं करेगा। हम सब तुम्हारे साथ हैं।'' सभी शुभचिंतक जानवरों ने यह कहते हुए मेमने को कंधे पर उठा लिया। वे सब गाते और गुनगुनाते हुए जीत का नृत्य करने लगे।

आकाश में चन्द्रमा तेजी से धरती की ओर चल पड़ा था। चिड़ियों के स्वर सुबह का उजाला फूटने का संकेत देने लगे। दूर एक पेड़ के पीछे मां की धुंधली सी आकृति को देख मोमिन मां –मां चिल्ला कर भागा। मां ने उसे दौड़ कर सीने से चिपटा लिया। सभी की आंखों में खुशी के आंसू छलक आये।

इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि संकट के समय में हमें अपना साहस नहीं छोड़ना चाहिए। हमें यह तय करना चाहिए कि ऐसे में कौन हमारी सहायता कर सकता है। हमें तरह–तरह के रूपों में मिलने वाले भेड़ियों से सावधान रहना चाहिए।

फीरोजाबाद जागरण

खेल-खेल में कठपुतली दे गई बड़ा संदेश

खादी सिर्फ वस्त्र या वर्दी नहीं, एक विचार है, तत्वज्ञान भी। यह जीवन का शास्त्र और भारत का अर्थशास्त्र भी है।

– कमलनयन बजाज

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

ताज साहित्योत्सव
''सूरकाव्य बाल-वात्सल्य स्त्री-प्रधान काव्य है''

शब्दम् संस्था द्वारा ब्रजभाषा काव्य को प्रोत्साहित करने के क्रम में ताज साहित्योत्सव के अंतर्गत सूरदास पर केन्द्रित सत्र के आयोजन में सह प्रायोजक के रूप में भाग लिया गया। यह आयोजन 13 दिसंबर 2013 को आगरा के होटल क्लार्क शीराज़ में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो. मैनेजर पांडे ने सूरकाव्य की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ''सूर काव्य के वात्सल्य वर्णन से बच्चों के प्रति समाज में नई दृष्टि का बोध जागृत किया जा सकता है। आज के समाज में बच्चों की स्थिति दयनीय है। बच्चों को अपंग बनाकर भीख मँगवाने का वीभत्स कार्य हमारे यहां होता है। अतीत में बचपन का सौंदर्य और उसके प्रति क्या दृष्टि थी, सूरदास का काव्य इसका उदाहरण है।'' ''घुटुरन चलत रेनुतन मंडित मुख दधिलेप किये'' आदि सूर के पदों का उदाहरण देकर प्रो. पांडे ने कहा बचपन की मनुष्यता का इतना बड़ा कवि अन्य कोई नहीं है।

सूरदास के काव्य को प्रो. पांडे ने मूलतः स्त्रीप्रधान काव्य कहा। उन्होंने कहा, ''उनके काव्य में यशोदा, राधा और गोपी आदि स्त्रियों की सशक्त उपस्थिति भारत में नारी और प्रेम की स्वतंत्रता को सिद्ध करती है।''

''सूर काव्य बताता है कि यह वही क्षेत्र है जहां प्रेम का महान काव्य रचा गया। अब यह क्षेत्र प्रेम की हत्या का क्षेत्र बन गया है। इस क्षेत्र में अगर किसी प्रेमी की हत्या की जाती है, तो वह सूरदास की हत्या है। कृष्ण ने प्रेम जाति और आयु की सीमाओं से परे जाकर प्रेम का पवित्र उदाहरण प्रस्तुत किया था।''

ताज साहित्योत्सव में सूरदास के काव्य पर परिचर्चा करते हुए प्रो. मैनेजर पांडे एव रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी।

प्रो. पांडे ने 'सूर मूर अक्रूर लै गये' और 'हरिहै राजनीति पढ़ि आये' जैसी कुछ पंक्तियों को उद्धृत कर बीते वक्त की राजनीतिक और सामाजिक विडंबनाओं पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि समाज और राजनीति में विकृतियां पहले भी रही हैं परंतु शासन के विवेक और दूरदृष्टि ने उनको विद्रूप होने से रोका है।

प्रो. मैनेजर पांडे ने बताया कि काव्य को जन–जन के बीच पहुंचाने के लिए संगीत के साथ जुगलबंदी अनिवार्य है। भक्त कवि इसीलिए कालजयी हैं कि उन्होंने पदों की रचना ही नहीं की, उन्हें गाया भी।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने सूरदास के वात्सल्य वर्णन को संसार का श्रेष्ठतम् साहित्य बताया। उन्होंने निवेदन किया कि देश और संस्कृति के लिए निस्वार्थ भाव से समन्वय किए जाएं। सच्चे अर्थों में संस्कृति संवर्धन के प्रयास तभी सार्थक हो सकेंगे। श्रीमती बजाज ने कहा, मेरा मानना है कि समान विचारों की अनेक छोटी–छोटी किरणों से मिल कर जब तक एक प्रकाश–पुंज नहीं बनाया जाएगा तब तक भाषा और संस्कृति के विकास का अपेक्षित लक्ष्य नहीं हासिल किया जा सकता। एक मन और एक विचार को लोगों के मिल कर काम करना ही होगा।

सूरदास के जीवन पर एक वृत्तचित्र का प्रदर्शन एवं प्रसिद्ध गायक हरिबाबू कौशिक ने शास्त्रीय संगीत और पदों का गायन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आयोजन में वरिष्ठ साहित्यकार प्रयाग शुक्ल भी उपस्थित रहे। समारोह के आयोजक हरविजय वाहिया, अशोक जैन सी. ए., अनिल शुक्ल एवं आर.एम. कपूर ने स्वागत किया। शब्दम् की ओर से श्री अंशुमान बावरी, सलाहकार अरविंद तिवारी एवं डॉ. महेश आलोक भी उपस्थित रहे।

ताज साहित्योत्सव में प्रो. मैनेजर पांडे, रामेंद्र मोहन त्रिपाठी एवं किरण बजाज का स्वागत करते हुए श्री अशोक जैन।

www.jagran.com

जागरण

सूरदास का वात्सल्य वर्णन है श्रेष्ठतम साहित्य

'शब्दम्' ने सूरदास के काव्य पर कराई चर्चा

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। ब्रजभाषा काव्य को प्रोत्साहित करने के क्रम में 'शब्दम्' द्वारा ताज साहित्य महोत्सव के अंतर्गत सूरदास पर केंद्रित विशिष्ट आयोजन में सहभागिता की गई। आगरा के क्लार्क शिराज में आयोजित सूरदास सत्र में प्रो. मैनेजर पांडे के साथ ही किरण बजाज एवं रामेंद्र त्रिपाठी ने भी शिरकत की। प्रो. पांडे ने सूर काव्य की प्रासंगिकता पर कहा कि इसमें वात्सल्य वर्णन से बच्चों के प्रति नई दृष्टि का बोध जागृत होता है।

शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने सूरदास के वात्सल्य वर्णन को संसार का श्रेष्ठतम साहित्य बताया। 'डॉक्यूमेंट्री फिल्म एवं पं. हरीबाबू

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

''ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर''
कबीर महोत्सव

शब्दम् एवं सहेज फाउण्ड़ेशन के संयुक्त तत्वाधान में चतुर्थ कबीर महोत्सव 8 जनवरी से 12 जनवरी तक मुम्बई के अलग–अलग 18 स्थानों पर 26 कार्यक्रम किये गये।

सहेज का उद्देश्य कबीर तथा अन्य सूफी एवं भक्ति रस के कवियों की कविताओं, गीत, दोहे आदि के माध्यम से प्रेम, भाईचारा, अध्यात्म, कुरीतियों के विरुद्ध एक शान्ति के संदेश को समाज में जन–जन तक पहुंचाना है, विगत 4 वर्षों से इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए कार्यक्रम कराये जा रहे हैं।

मुम्बई महानगर के विशाल क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए, कबीर महोत्सव में 26 कार्यक्रम, मुम्बई के 18 अलग–अलग स्थानों पर आयोजित किये गये। पश्चिम क्षेत्र के फोर्ट, भिण्डी बाजार, बान्द्रा, खार, जुहू, अन्धेरी तथा बोरीवली एवं पूर्व क्षेत्र के परेल, भायखला, सायन, विद्याविहार, देवनार, बेलापुर, तथा थाना क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किये गये। सभी कार्यक्रम पूर्ण निःशुल्क तथा आम जनता के लिये थे। सभी वर्गों के लोगों ने कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम में उच्चकोटि के उत्कृष्ट लोकगायक भारत के अलग–अलग प्रांत से आये।

- मालवा से सहृदय, सबको सुखद आनन्द

कलाकार लंखुदा बाउल के साथ शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज।

की अनुभूति कराने वाले–पद्मश्री प्रहलाद सिंह तिपानिया

- राजस्थान के लोक संगीत में कबीर तथा मीरा को जोड़ने वाली मरुस्थल की कोकिला कंठी – भंवरी देवी
- चुरू–राजस्थान से कच्छ लोक कहावतों में कबीर, मीरा तथा शाह अब्दुल लतीफ भिटाई की कृतियों का समावेश करने वाले– मोरालाला मारवाड़ा
- कच्छ–गुजरात से, बंगाल के बाऊल लोक संगीत की अद्भुत प्रस्तुति देने वाली – पार्वती बाऊल एवं लक्ष्मणदास बाऊल
- मध्यप्रदेश से नई पीढ़ी के दिलों में आध्यात्मिकता की ज्योति जागृत करते हुए– देवनारायण सारोलिया एवं तिपानिया बुआयस

रमा वैद्यनाथन द्वारा भरत नाट्यम नृत्य में ''मैड एण्ड डिवाईन'' नामक प्रस्तुति में जनाबाई एवं लाल देड़ की कविताओं का सजीव वर्णन, भारतीय वाद्ययन्त्र वादक तथा गायक मकरन्द देशपाण्डे तथा सतीश कृष्णमूर्ति के सहयोग से संजुक्ता वाघ द्वारा वरकारी सम्प्रदाय से उभा विटेवारी का विभिन्न सुरों में सुरमयी प्रस्तुतिकरण।

हजरत अमीर खुसरो पर एक अध्याय :

- दिल्ली के दास्तांगो अंकित चड्ढा, कुशल वाद्ययन्त्र वादक एवं गायिका, बिन्दु मालिनी बैंगलूर से तथा चैन्नई से वेदान्त भारद्वाज, तीनों की जुगलबन्दी द्वारा संगीतमय कहानी का सुन्दर प्रस्तुतिकरण।
- अमीर खुसरो की कविताओं में अध्यात्म – एक परिचर्चा द्वारा डॉ0 सुनील शर्मा, विभागाध्यक्ष, आधुनिक भाषा एवं तुलनात्मक साहित्य –बॉस्टन विश्वविद्यालय
- युसूफ सईद तथा इफ्फ़त फ़ातिमा द्वारा निर्देशित ''द हेरिटेज ऑफ़ अमीर खुसरो'' नामक वृत्त चित्र की प्रस्तुति।

यहाँ एक मुख्य बात बताने की है कि अंकित, बिन्दु और वेदान्त तीनों भारत के अलग–अलग शहरों में रहते हैं। विगत वर्ष महोत्सव में पहली बार मिले थे, दूर रहने की परेशानी के बाद भी तीनों ने एक साथ मिलकर प्रस्तुति देने का निर्णय लिया था।

भक्तिरस के विभिन्न रंग

सोनम कालरा एवं 'द सूफ़ी गॉस्पेल प्रोजेक्ट' ने पहली बार महोत्सव में सहभागिता करते हुए गॉस्पेल गायन तथा सूफ़ी गीतों के माध्यम से आस्था और विश्वास के नये आयाम प्रस्तुत किये ।

नीरज आर्य के 'कबीर कैफे' ने आधुनिक वाद्य यन्त्रों के प्रयोग द्वारा कबीर की कविताओं को अपने स्वर देकर अत्यन्त सुमधुर एवं कर्णप्रिय बना दिया । फिल्म निर्माता शबनम विरमानी तथा गायक–कवि–लेखक विपुल रिक्खी ने भी कबीर के गीतों की संगीतमय प्रस्तुति दी।

परम्पराओं एवं भक्तिरस के कवियों पर वृत्त चित्र :

- 'मन फकीरी'–निर्देशक एम0 के रैना, (कश्मीर के सूफ़ियाना संगीत पर

आधारित)

- 'अछिन पाखी'–निर्देशक–तनवीर मोक्कमल (बांग्लादेश)
- 'दो दिन का मेला'–निर्देशक – अंजली मोन्टेरियो तथा के. पी. जयाशंकर
- 'द हेरिटेज आफ अमीर खुसरो–निर्देशक–युसूफ़ सईद एवं इफ्फ़त फ़ातिमा

विशेष कार्यक्रम :

कार्यक्रमों की श्रृंखला में नीरज आर्य तथा फ्लेमशाट फकीर्स ने उमेरखाड़ी रिमाण्ड होम, डोंगरी आकर बच्चों के लिये गीत सुनाये। वहाँ रहने वाले परिवारों में कार्यक्रम के प्रति अत्यन्त उत्साह एवं उमंग के कारण यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

मोरालाला मारवाड़ाजी ने एस.एस.आर.वी. एम. विद्यालय, धरावी में बच्चों के लिये कच्छ लोक–संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। नैनिहाल (बालिका गृह, खारघर) की बालिकाओं द्वारा कार्टर रोड, बान्द्रा में दिये गये गीतों का कार्यक्रम बहुत खास रहा। नीरज आर्य, फ्लेम शाट फकीर्स के सहयोग से सहेज फाउण्डेशन द्वारा हर दो माह के अन्तराल पर 'नौनिहाल' संस्था के बच्चों के लिये संगीत की कार्यशाला आयोजित की जाती है। विगत कई माह से नौनिहाल की बालिकाएं कबीर के गीतों को आधुनिक संगीत के सुरों में सजाने की शिक्षा, नीरज आर्य के दिशा–निर्देशन में पा रही हैं। बड़ी लगन के साथ बालिकाओं ने कार्यक्रम की तैयारी की तथा कार्यक्रम के बाद अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया।

सह प्रायोजक, सहयोगी तथा कार्यकर्ता बन्धु :

शब्दम् इस वर्ष के कबीर महोत्सव के सह–प्रायोजक थे। शब्दम् ने भारत की सभी लोक कलाओं को एक सूत्र में जोड़कर एक साथ लाने का सार्थक प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य में हो रहे नवीन कार्यों तथा पूर्व में रचित महान कृतियों को समाज के समक्ष लाने में संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने नाम की सार्थकता को चरितार्थ करते हुए एवं भाषा के महत्व को समझते हुए, हिन्दी तथा भारत की अन्य भाषाओं के मध्य एकरसता लाने का पुनीत कार्य, 'शब्दम्' संस्था द्वारा कई वर्षों से निरन्तर किया जा रहा है।'

–प्रीति तुरकिया, फाल्गुनी देसाई की रिपोर्ट

मुंबई में शब्दम् कराएगा पांच दिवसीय कबीर महोत्सव

मुंबई में होगा शब्दम् द्वारा विशाल कबीर महोत्सव

शिकोहाबाद (सी न्यूज)। नववर्ष में प्रेम, आध्यात्म और समन्वय का संदेश देने के लिए नगर की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था शब्दम द्वारा मुंबई में 5 दिवसीय विशाल कबीर फैस्टिबल का आयोजन किया जा रहा है। संस्था के लोग जोर-शोर से इसकी तैयारियों में जुटे हैं।

संस्था अध्यक्ष किरण बजाज ने बताया

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

'बंसत मेलोडी' अन्तर्राष्ट्रीय संगीत संध्या

'शब्दम्' और 'शारदा ग्रुप' के संयुक्त तत्वावधान में 'हिन्दुस्तान कालेज आफ सांइस एण्ड टैक्नोलाजी' फरह मथुरा में शास्त्रीय कार्यक्रम भारतीय और विदेशी कलाकारों द्वारा आयोजित किया गया।

आमंत्रित कलाकार श्री सलिल भट्ट ''सात्विक वीणा'' (भारत), श्री मथायस म्यूलर ''गिटार'' (जर्मनी), श्री कौशिक कुंवर ''तबला'' (भारत) द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें राग 'लॉस्ट इन टाइम' एवं 'जोग जेह' एक अद्भुत कलात्मक गठजोड़ था। इन रागों के मध्य कौशिक जी ने जो तबला बादन किया उससे आडिटोरियम उपस्थित सभी श्रोतागण जड़चेतन अवस्था में पहुंच गये।

कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता थी आधुनिक इंजीनियरिंग के छात्र–छात्राओं

कार्यक्रम से सम्बन्धित पोस्टर।

के सामने भारतीय कलात्मक संस्कृति को प्रस्तुत करना। कार्यक्रम की सबसे बड़ी सफलता यह भी थी कि आधुनिक बच्चे जब भारतीय राग से मंत्रमुग्ध होकर अपने आधुनिक अंदाज में तालियां और सीटियां बजा रहे थे, तो एक बार को यह अटपटा–सा लगा, परन्तु उनके अपने वास्तविक अंदाज का शास्त्रीय संगीत को

कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार।

यह सलाम, कलाकारों को भी बहुत पसंद आया। सलिल भट्ट ने भावविभोर होते इस पर कहा कि मैं आजतक यह सुनता आया हूँ कि भारतीय नौजवान शास्त्रीय संगीत से दूर होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा, ऐसा कहने वाले एक बार इस ऑडिटोरियम में आयें और कार्यक्रम के प्रति भारतीय युवा का उत्साह देखें।

कार्यक्रम के अन्त में हिन्दुस्तान कालेज के चीफ डायरेक्टर डा. वी.के. श्रीवास्तव ने सभी श्रोतागण एवं कलाकारों आभार व्यक्त किया।

इस तरह 'शारदा ग्रुप' एवम् 'शब्दम्' के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

कार्यक्रम के अन्त में समूह छायांकन में उपस्थित कलाकार एवं प्रमुख गण।

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

सरोद वादन

शब्दम् द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम की श्रृंखला में स्पिक मैके के सहयोग से 20 अगस्त को 'सुरमणि' सरोद वादक पंडित विश्वजीत रॉय चौधरी ने संगीत संध्या को अपने रागों से अविस्मरणीय बना दिया। इसमें तबले पर उनका साथ दुर्जय भौमिक जी ने दिया।

पं. विश्वजीत रॉय चौधरी ने सरोद की तानों से 'राग किरवानी' और 'राग बंसत' प्रस्तुत किया। राग किरवानी उत्तर और दक्षिण भारतीय दोनों ही स्थानों पर बहुत प्रसिद्ध राग है।

पं. विश्वजीत रॉय चौधरी ने एक शास्त्रीय वाद्ययंत्र सरोद के माध्यम से संगीत सुनने वालों को जिस प्रकार रागों के जाल में बांधकर मंत्रमुग्ध कर दिया वह वास्तविकता में भारतीय संगीत की एक विजय थी। सभी छात्र–छात्राएं, अन्य संगीत प्रेमी, सभा में हर धुन के बाद तालियों की गडगडाहट के साथ नजर आए।

इस अवसर पर चौधरीजी ने संगीत की परंपरा और उसके घरानों के बारे में उपस्थित श्रोताओं एवं स्कूली बच्चों को

सरोद एवं तबला वादन करते पं. विश्वजीत रॉय चौधरी एवं दुर्जय भौमिक।

बताया। उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी संगीत प्रेमियों का सरोद से परिचय कराया।

संस्कृति भवन में उपस्थित एक मुद्रा में संगीत रस लेते श्रोतागण।

सम्माननीय कलाकारों के साथ विद्यार्थी एवं शिक्षकगण।

संस्कृति भवन हॉल के मुख्य द्वार पर कलाकार और सम्मानित अतिथिगण एवं शब्दम् सदस्य।

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

न्यूजीलैंड में 'शब्दम्' और 'प्रयास' प्रस्तुति चरणदास चोर

'प्रयास' एक लाभ निरपेक्ष नाट्य समूह है, जो न्यूजीलैंड के व्यापक दर्शक–वर्ग के लिए मूल भारतीय नाटकों का निर्माण अंग्रेजी में करने की दिशा में कार्यरत हैं। इस वर्ष 'प्रयास' ने ऑकलेंड के आर्ट परमॉर्मिंग सेन्टर में चरणदास चोर नाटक श्रृंखला के अंतर्गत 22 से 25 जून 2014 तक कुल 7 प्रस्तुतियां दी।

चरणदास एक ऐसा दिलकश चोर है, जो कानून को धोखा और चकमा देकर जीवन–यापन करता है, इसके बावजूद वह बेहद सिद्धांतवादी आदमी है और वह रानी तक को प्रिय होता है! अपने कारनामों और कर्मों से वह ''ईमानदार चोर'' स्थापित संस्थाओं–धर्म, राज्य एवं व्यवस्था के दोहरे मापदंडों को सबके सामने लेकर आता है।

कार्यक्रम के कुल 18 कलाकारों ने भूमिका निभायी तथा 10 सदस्य सहायक भूमिका में थे। इस वर्ष पाँच व्यक्तियों के एक 'लाइव बैंड', जिसमें एक एकल गायक, एक तबला वादक, एक सितार वादक, एक बाँसुरी वादक शामिल थे, ने संगीत के प्रभाव और साथ ही धुनों एवं गीतों की मदद से इस कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए!

'शब्दम्' और 'प्रयास' का आपसी सम्बन्ध काफी पुराना है और आगामी वर्षों में भी जारी रहेगा।

नाट्य प्रस्तुति देते हुए कलाकार।

चरणदास चोर का बैनर।

कलाकारों के साथ समूह छायांकन।

सुदीप्ता व्यास का 'प्रयास'

'प्रयास' की सह संस्थापक श्रीमती सुदीप्ता व्यास, भारतीय नाटकों को अंग्रेजी में रूपांतरित कर उन्हें न्यूजीलैण्ड में पहचान दिलाने का कार्य कर रही हैं। सुदीप्ता व्यास ने प्रयास के दस वर्षों के कार्यकाल में, दस से अधिक नाटकों में निर्देशन के साथ–साथ उनमें अभिनय भी किया है। 'रूदाली', 'चरणदास चोर' कुछ ऐसे प्रसंशनीय नाटक हैं, जिनमें सुदीप्ता व्यास ने अभिनय किया है।

मुम्बई निवास के दौरान कलाप्रेमी वातावरण में सुदीप्ता व्यास को अपनी अभिनय प्रतिभा का अनुभव हुआ। मुम्बई में भी उन्होंने विभिन्न कलाओं से सम्बन्धित नाटकों में भाग लिया, जो अति प्रशंसनीय एवं लोकप्रिय रहे।

सुदीप्ता व्यास ने मनोविज्ञान से स्नातकोत्तर के साथ–साथ, सामाजिक संचार में भी स्नातकोत्तर का डिप्लोमा प्राप्त किया।

न्यूजीलैण्ड में सुदीप्ता व्यास ने जाने–माने डायरेक्टर एवं रंग–मंच के विशेषज्ञों जैसे मार्गेट मैरी हालेंस, अहिकरूणाकरण, लॉरेन डिवायन और अमित औहदेदार के साथ काम किया। सुदीप्ता व्यास ने अपने कार्यकाल में

नाट्य प्रस्तुति देते हुए कलाकार।

प्रयास को न्यूजीलैण्ड के ऑकलैण्ड में एक ब्राण्ड बनाने का कार्य किया है। सुदीप्ता ने जिन्हें कि कला से बहुत प्रेम है, भारत की कई कहानियों को अंग्रेजी भाषा में रूपांतरित कर न्यूजीलैण्ड में सफलता से मंच पर प्रस्तुत किया।

'शब्दम्' के साथ सुदीप्ता व्यास का बहुत पुराना सम्बन्ध है, उन्होंने कई लेख अंग्रेजी से हिन्दी एवं हिन्दी से अंग्रेजी में किए हैं।

प्रयास

न्यूजीलैण्ड के आकलैण्ड शहर में वर्ष 2005 में लाभनिरपेक्ष संस्था 'प्रयास' का उदय भारतीय कला एवं संस्कृति को रंग–मंच के माध्यम से न्यूजीलैण्ड समुदाय में प्रोत्साहित करने के लिए हुआ। 'प्रयास' अब आकलैण्ड रंग–मंच में अपनी पूर्ण पहचान बना चुका है। 'प्रयास' नवोदित कलाकारों को आगे बढ़ने के लिए अवसर प्रदान करता है।

चरणदास चोर के लेखक हबीब तनवीर

स्वर्गीय हबीब तनवीर आधुनिक भारतीय रंगमंच के सबसे प्रसिद्ध एवं नाट्य लेखकों में से एक थे जिन्होंने भारतीय शास्त्रीय एवं आधुनिक संगीत को जोड़ने का कार्य किया। श्री तनवीर ने ग्रामीण अंचल के कलाकारों को अपने नाटकों में स्थान दिया। नृत्य और गायन की शैली का प्रयोग करके ग्रामीण संस्कृति को बहुत ही सरल तरीके से शहरी श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। 'चरणदास चोर' नाटक उनके अभिनय कौशल का उदाहरण है। यह नाटक भारत एवं विदेश में बहुत लोकप्रिय हुआ है।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

शब्दम् बालिका-महिला पाठशाला

वह बालिका या महिला जो किसी अभाव के कारण शिक्षा की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पायी हैं, उन्हें साक्षर बनाने के लिए शब्दम् संस्था 'बालिका–महिला पाठशाला' चलाती है। इसका मुख्य उद्देश्य निरक्षर महिलाओं– बालिकाओं को हिन्दी व गणित का सामान्य ज्ञान देना है, ताकि इस ज्ञान के माध्यम से वे अपनी रोजमर्रा की जिंदगी को और अच्छा बना सकें।

आज भी भारत के 26 प्रतिशत लोग निरक्षर हैं, जिसमें से अधिकांश महिलाएँ हैं। 'बालिका–महिला पाठशाला' के द्वारा शब्दम् इन निरक्षर महिलाओं को शिक्षा की धारा से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। इस दिशा में शब्दम् के कुछ भिन्न प्रकार के अनुभव भी रहे हैं। जैसे– शिक्षा की अपेक्षा यह महिलाएँ खेती/शादी/मेले आदि में जाना ज्यादा पसंद करती हैं। कभी–कभी ग्रामजनों के मन में यह भी भ्रान्ति आती है कि संस्था उनके नाम पर सरकार से कोई लाभ ले रही है। इन सब अनुभवों के साथ, शब्दम् की पूरी इच्छा है कि शिक्षा की धारा से छूटी हुई सभी महिलाओं को हम 'बालिका–महिला पाठशाला' से जोड़ सकें।

वर्तमान में हिन्द लैम्पस् परिसर में हमने 'बालिका–महिला पाठशाला' का नया केन्द्र खोला है। एक नए प्रयोग के तहत इस बालिका महिला पाठशाला में 10 वर्ष से कम उम्र के छात्र व किसी भी उम्र की महिलाओं को प्रवेश दिया जा रहा है।

यदि इस संदर्भ में आप लोगों के पास कोई भी सुझाव या विचार हो तो कृपया 'शब्दम्' संस्था को मेल/ बेवसाइट/ व्यक्तिगत /फोन द्वारा सूचित करें।

बलिका–महिला पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करते छात्र/छात्राएं।

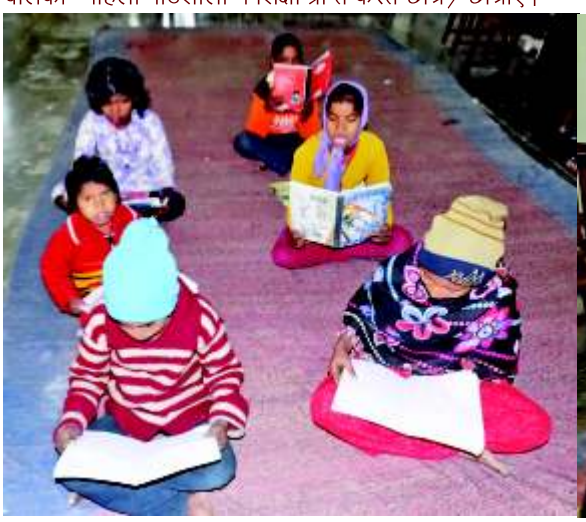

छात्रों को अंक ज्ञान देती हुई शब्दम् प्रशिक्षिका।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

विद्यादानम् महादानम्

निरक्षरता आधुनिक भारत का सबसे बड़ा कलंक है। अगर भारत को विकासशील देशों की सूची से निकलकर विकसित देशों की सूची में आना है, तो भारत के प्रत्येक नागरिक का साक्षर होना अनिवार्य है।

आज के आधुनिक भारत में भी लगभग 26 प्रतिशत लोगों को अक्षर बोध नहीं है। यह भारत के 74 प्रतिशत साक्षर लोगों के ज्ञान के ऊपर प्रश्नचिह्न है।

यदि हम केवल उ0प्र0 की बात करें तो वर्तमान में लगभग 33 प्रतिशत लोग अभी अक्षर बोध से दूर हैं। हम बड़े गर्व के साथ अपने देश को भारत माता कहते हैं। परन्तु हम स्वयं से पूछें कि हमने इस अंधकार को मिटाने के लिये क्या प्रयत्न किये ?

उपर्युक्त भाव को केन्द्र बिन्दु बनाकर 'विद्यादानम् महादानम्' जागरूकता अभियान प्रारम्भ किया गया। प्रथम चरण में इसके माध्यम से अनपढ़ कन्याओं एवं महिलाओं के मध्य साक्षरता की प्रेरणा एवं शैक्षणिक क्रियाकलापों से जागरूकता का प्रसार किया जा रहा है। संस्था इस बात पर भी जोर दे रही है कि कम से कम एक व्यक्ति, एक अन्य व्यक्ति को तो साक्षर बनाये।

भगवत् भास्कर पं. श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री 'विद्यादानम् महादानम्' पत्र के साथ।

वर्तमान में 'विद्यादानम् महादानम्' जागरूकता अभियान के तहत जनपद के लगभग 85 विद्यालय इस मुहिम से जुड़ चुके हैं। लगातार 'विद्यादानम् महादानम्' पत्र समाचार पत्रों के माध्यम से घर–घर पहुंचाया जाता रहा है, शब्दम् संस्था के सदस्य हर घर पहुंचकर यह पत्र लोगों को दे रहे हैं तथा इस मुहिम से जुड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। गाँव–गाँव में चौपाल लगाकर भी मुहिम से जुड़ने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया जा रहा है।

हिन्द परिवार के सभी वेन्डर, सभी कर्मचारी एवं अधिकारियों को भी इस मुहिम से जोड़ने की कोशिश की जा रही है।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

यदि आज की नारी को पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तो सर्वप्रथम उसे आर्थिक रुप से स्वावलम्बी बनना होगा। इस माध्यम से उनमें आत्म विश्वास पैदा होगा जिससे वह न सिर्फ अपनी मदद कर पाएंगी, बल्कि अपने आस–पास के स्थानों पर योगदान देकर राष्ट्र निर्माण में भी अपनी भूमिका तय कर पाएंगी।

शब्दम् सिलाई केन्द्र उपरोक्त शब्दों को ध्यान में रखते हुए अपना मूलभाव बनाकर शिकोहाबाद के हिन्द परिसर में व ठेठ ग्रामीण अंचल के ग्राम हरगनपुर में अपना प्रशिक्षण केन्द्र चला रहा है।

लगभग पिछले एक दशक से शब्दम् सिलाई केन्द्र लगभग 1000 बालिकाओं/महिलाओं को सिलाई कला में निपुण बनाकर स्वावलम्बी बना चुका है। वर्तमान सत्र में बालिका/महिलाओं के अति उत्साह को देखते हुए हिन्द परिसर स्थित प्रशिक्षण केन्द्र का सायंकालीन सत्र भी प्रारम्भ किया गया।

इस वर्ष शब्दम् प्रशासन ने कुछ पुराने प्रशिक्षणार्थियों से सम्पर्क किया तथा उनमें से कुछ महिलाएं अपनी सिलाई कला के माध्यम से न सिर्फ अपना जीविका पालन

ग्राम हरगनपुर स्थित सिलाई केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुई बालिकाएं।

कर रही हैं बल्कि अन्य महिलाओं को भी सिलाई कला सिखाने का प्रयास कर रही हैं। इस प्रकार शब्दम् एक से दूसरा और दूसरे से तीसरा दीपक जलाने के उद्देश्य में सफल रहा है। ऐसे परिणाम शब्दम् को इस तरह की परियोजना और गम्भीरता से चलाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

हिन्द परिसर स्थित सिलाई केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करती बालिकाएं।

ग्रामीण सिलाई केन्द्र पर प्रशिक्षणार्थियों के साथ शब्दम् पदाधिकारी।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

विचार गोष्ठी
'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'

आज के आधुनिक युग में भी बेटे–बेटियों में जन्म से ही होने वाले भेद–भाव के कारण अभी भी बेटियां सामाजिक एवं राष्ट्रीय योगदान का हिस्सा नहीं बन पा रही हैं। शब्दम् ने इसी विषय को गहराई से उठाते हुये 'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' विषय पर विचार गोष्ठी की, जिसमें युवा वर्ग व समाज को नई दिशा दे चुके बुद्धजीवी वर्ग के बीच विचारों का आदान–प्रदान हुआ। नूतन और पुरातन विचारों का संगम एक साथ, एक ही मंच पर, विषय को नए आयामों तक ले गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम सभी छात्रों एवं बुद्धिजीवियों को 'हर बेटी दुर्गा है' पत्र दिया गया।

डा. महेश आलोक ने शब्दम् अध्यक्ष की मार्मिक अपील प्रस्तुत की, जिसमें शब्दम् अध्यक्ष ने कहा ''शक्ति की आराधना के लिए नारी को माध्यम माना गया है। पूरा समाज इस मान्यता को स्वीकार करता है और नारी–स्वरूपा शक्ति की पूजा करता है, लेकिन वर्तमान समय की एक बेहद तकलीफदेह त्रासदी यह है कि वास्तव में आज की नारी शक्ति चारों ओर संकटों से घिरी असहाय और अबला बन कर रह गई है। इसका निदान हर परिवार से आरम्भ होना चाहिए। बेटी को उसके सारे अधिकार देने चाहिए।''

जे.एस. कॉलेज के छात्र विक्रान्त यादव ने कहा कि बहनों को सशक्त करने के लिए उन्हें सर्वप्रथम परिवार में पुत्र के समान अवसर देने की परम्परा प्रारम्भ करनी होगी। आज भी हम समाज में पौराणिक रीतियों को ढो रहे हैं, जो अब कुरितियों में बदल चुकी है।

छात्रा सरिता यादव ने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बेटी, बेटों की बराबरी हासिल कर सकती है।

छात्रा नेहा ने कहा कि लड़कियों को स्वयं ही सशक्त होना होगा। हमें हर कुरीति का विरोध

गोष्ठी में आमंत्रित छात्र–छात्राओं का समूह।

विचार गोष्ठी आयोजन में अपने विचार प्रस्तुत करती छात्रा।

करना होगा, चाहे वह स्वयं हमारे परिवार में ही क्यों न हो।

डा. सत्यवीर सिंह ने कहा कि प्रारम्भ से हमारा समाज पुरुष प्रधान सोच का रहा है। अब समय आ गया है कि हमें अपनी मानसिकता बदलने पर विचार करना होगा।

डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने इसी मानसिकता की सोच को आगे बढ़ाते हुए कहा कि आज पढ़े–लिखे लोग ही सबसे ज्यादा अल्ट्रासाउण्ड़ सेन्टर पर पुत्र या पुत्री का पता करने पहुंचते हैं। उन्होंने कहा 'आज के समाज की यह धारणा भी पूरी तरह गलत है कि स्त्री शारीरिक एवं मानसिक दृष्टिकोण से पुरूष से कमजोर होती है, यदि पुरुषों के समान अवसर स्त्रियों को मिलें तो स्त्रियां पुरुषों के बराबर नजर आएंगी।

कार्यक्रम के मुख्यवक्ता श्री अरविन्द तिवारी ने अपनी रचना 'नहीं बजती है ढोलक की थाप बेटी के पैदा होने पर, खूब बजती है थाप बेटी के विदा होने पर' से शुरू करते हुए अपने विचार साझा किये कि बेटियों के साथ होने वाले यौन दुराचारों में 60 प्रतिशत लोग परिवार वाले होते हैं, अतः बेटियों को स्वयं खड़ा होना होगा, उन्हें विरोध स्वरूप दुर्गा बनना ही होगा।

कार्यक्रम अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि आज हुई इस वार्ता में बहुत से नये विचार इस मंच पर आए, छात्र–छात्राओं ने भी अपने युवा अंदाज में अपनी भावनाओं को रखा। जहां तक कुरीतियों की बात है, सनातन धर्म के वैदिक काल में यह हमारे समाज का हिस्सा नहीं थीं, धीरे–धीरे स्थितियां बदलीं और ये कुरीतियां हमारे समाज का हिस्सा बन गईं।

आज का असुर कहीं और नहीं, हमारे खुद के अंदर है। आवश्यकता है अपने कुसंस्कारों को समाप्त करने की। दुर्गा बनने का अर्थ इन्हीं कुसंस्कारों पर विजय पाना है।

धन्यवाद ज्ञापन श्री मंजर उल–वासै ने किया।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

दस-सूत्री कार्यक्रम की घोषणा 'बहन बचाओ'

- बहन सशक्त कैसे हो ?
- बहन सुरक्षित कैसे हो ?
- बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो ?
- बहन कुरीतियों से कैसे बचे ?
- राष्ट्रनिर्माण में बहन की भूमिका कैसे दृढ़ हो ?

इन बिन्दुओं पर 'पर्यावरण मित्र' एवं 'शब्दम्' के संयुक्त तत्वाधान में संस्कृति एवं प्रकृति के अंतर्गत हिन्द लैम्प्स स्थित संस्कृति भवन में 'बहन बचाओ' गोष्ठी का आयोजन किया। इसमें विद्यालयों –महाविद्यालयों के बुद्धिजीवी, अध्यापकगण एवं अन्य गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

अब समय इस चिंतन को तेजी से सक्रिय करने का है और यह तभी हो सकता है जब भावी पीढ़ी को निरन्तर सही दिशा के लिए प्रेरित करें एवं पूर्ण रूप से सहयोग दें।

जब भाई और बहन को हर जगह समान अवसर, सहयोग और अधिकार मिलेंगे तभी हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति होगी। हमें अभिवावकों को भी प्रेरित करने की आवश्यकता है, जिससे हमारा आन्दोलन परिवार से शुरू होकर आगे बढ़े।

किरण बजाज ने कहा कि हम सब मिलकर फिरोजाबाद जिले में 'बहन बचाओ' अभियान की ऐसी अलख जगाएं कि पूरे भारत में यह रोशनी फैल जाए और हमारी हर बहन–बेटी भारत का भविष्य उज्जवल करने में सहायक हो।''

कार्यक्रम अध्यक्ष डा. रजनी यादव ने कहा ''हम सभी घोषणा पत्र वाले बिन्दुओं को क्रियान्वित करने में अपनी पूर्ण भूमिका अदा करेंगे। यह समय की मांग है कि हम स्कूल से सकारात्मक कदम उठाएं।''

कार्यक्रम में प्रतिभागी शिक्षकगण एवं अन्य।

अरविन्द तिवारी द्वारा अध्यक्ष का संदेश।

आदर्श कृष्ण महाविद्यालय के प्राचार्य आर. के सिंह ने कहा कि ''हम सभी कृत संकल्पित हैं और इन मुद्दों पर बहन–बेटी की सुरक्षा को लेकर लगातार अपने महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के मध्य परामर्श कर रहे हैं।''

भूगर्भशास्त्री डा. राजन सिंह, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय के प्रो. कप्तान सिंह, यंग स्कॉलर्स अकेडमी के ज्ञानेन्द्र यादव, ब्राइट स्कॉलर्स अकेडमी के पीयूष तिवारी, यूरो किड्स, गायत्री शक्ति पीठ के रवीन्द्र शर्मा, लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल की अध्यापिकाओं ने कहा कि जहां तक बहन बचाओ आन्दोलन की बात चल रही है हम इस दिशा में क्या कार्य कर सकते हैं? संसद एवं विधान सभा में भी चर्चाएं हो रही हैं फिर भी दिशा और दशा सुधर नहीं रही है। महिलाओं के प्रति हमें अपनी भावना को बदलना होगा और उनके प्रति अपनी सम्यक् दृष्टि अपनानी होगी।

सरस्वती विद्या मन्दिर के प्रधानाचार्य अशोक कुमार ने कहा कि '' किशोरावस्था में छात्र–छात्राएं इण्टरनेट के दुरुपयोग से प्रभावित हो रहे हैं और इससे उनके बिगड़ने का खतरा बढ़ता जा रहा है जो चिन्ता का विषय है। इण्टरनेट का दुरुपयोग न हो इसलिए हमें उन्हें परामर्श देते रहने की आवश्यकता है।

विचार गोष्ठी में एक संयुक्त घोषणा पत्र तैयार किया गया, जिन बिन्दुओं पर शैक्षिणिक संस्थाएं कार्य करेंगी।

1. शिक्षक अभिवावक समिति का निर्माण।
2. मातृशक्ति सम्मेलनों का क्रियान्वयन।
3. बालिका सशक्तिकरण समितियों का निर्माण।
4. लड़कियों का सशक्तिकरण।
5. जूडो–कराटे इत्यादि का प्रशिक्षण।
6. संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा।
7. इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों से निपटने के लिए ठोस उपाय।
8. पाठ्यक्रमों के आधार पर समय–समय पर विचार गोष्ठी।
9. लड़के–लड़कियों को परामर्श।
10. शालीन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन के लिए अंक।

बहन बचाओ आंदोलन पर गोष्ठी में मंथन

गोष्ठी में बहन बचाओ का दिया संदेश

महिला दिवस

समय आ गया है कि सिर्फ महिला दिवस मना लेने से काम नहीं चलेगा। हमें देखना होगा, महिलाओं पर अन्याय अत्याचार क्यों हो रहे हैं। मेरी मान्यता यह है कि इसका मुख्य कारण जीवन मूल्यों का अवमूल्यन और घोर भ्रष्टाचार और शासन का पतन है। प्रत्येक परिवार अगर जन्म से ही हर बालिका को समान अवसर और अधिकार दे, तो कोई मुश्किल ही नहीं आयेगी। जब माँ–बाप ही उसे उसका जन्मसिद्ध सम्पूर्ण अधिकार नहीं देगें, तो दूसरों से अपेक्षा फिजूल है फिर सामाजिक कुरीतियों से महिलाओं को बचाना होगा। अगर लड़की अपने पैरों पर खड़ी होगी तो विवाह सम्बन्धी अत्याचार नहीं होंगे। इस कारण महिलाओं के मूल मुद्दों पर विचार कर, सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है तभी आधी आबादी, सशक्त बनेगी और देश मजबूत बनेगा।

महिला दिवस पर शब्दम् अध्यक्ष द्वारा सम्मानित महिलाओं का समूह

प्रश्नमंच

शब्दम् द्वारा सतत् स्थायी कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के मध्य 2005 से प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। देशभक्ति, प्रकृति एवं संस्कृतिक, भारतीय त्योहार–उत्सव, हिन्दी भाषा, साहित्य – व्याकरण, रामायण, गीता, महाभारत आदि पर आधारित प्रश्न इस प्रश्नमंच कार्यक्रम का आधार हैं। प्रश्नमंच कार्यक्रम का उद्देश्य प्रश्नों के माध्यम से छात्रों के मध्य भारतीय संस्कृति के प्रति जिज्ञासा पैदा करना एवं भारतीय संस्कृति व हिन्दी भाषा के प्रति जागरूकता और आर्कषण पैदा करना है।

अभी तक लगभग 140 विद्यालय–महाविद्यालयों के 80 हजार छात्र–छात्राओं के मध्य प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किया जा चुका है।

इस वर्ष नगर के मधुमाहेश्वरी, प्रह्लादराय टीकमानी, डी.डी. कान्वेन्ट पब्लिक स्कूल, विवेकानन्द विद्यापीठ, नारायण महाविद्यालय, शान्ति देवी आहूजा महाविद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, इन्दिरा मैमोरियल, ब्राइट स्कॉलर्स नारायण महाविद्यालय द्वारा एन.एस.एस. कैम्प में सफल आयोजन हुए।

जूनियर, इंटरमीडिएट और ग्रेजुएट वर्ग तक के लगभग 2000 छात्र–छात्राओं ने उत्साह के साथ अपने–अपने विद्यालय में आयोजित

जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रश्नमंच कार्यक्रम।

प्रतियोगिता में भाग लिया।

इन विद्यालय–महाविद्यालयों ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया, जिसके लिए शब्दम् आभारी है। प्रश्नमंच कार्यक्रम 'शब्दम्' सलाहकार मंज़र उल–वासै एवं शब्दम् टीम के ऊर्जान्वित प्रयास के कारण उपरोक्त सफलताएं प्राप्त कर पायी है।

हिन्दी दिवस पर आयोजित नारायण महाविद्यालय में प्रश्नमंच का समूह छायांकन।

मधु माहेश्वरी विद्यालय के प्रश्नमंच कार्यक्रम में प्रश्न का उत्तर देने के लिए उत्साहित छात्राएं।

फिरोजाबाद जनपद के सरस्वती विद्या मन्दिर से आए शिक्षकों के मध्य आयोजित हिन्दी प्रश्नमंच।

ब्राइट स्कॉलर्स अकाडेमी सिरसागंज में आयोजित प्रश्नमंच।

इन्दिरा मैमोरियल में विजेता टीम के साथ शब्दम् टीम एवं अध्यापकों का समूह छायांकन।

प्रश्न मंच में बही ज्ञान की धारा

हिन्दी के प्रश्नों का छात्रों ने दिया बेबाकी से उत्तर

'शब्दम्' का प्रश्न मंच

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

जनपदस्तरीय प्रश्नमंच
(इण्टरमीडिएट स्तर)

इण्टरमीडिएट जनपदस्तरीय प्रश्नमंच ज्ञानदीप विद्यालय में किया गया। इसमें प्रहलाद राय टिकमानी इण्टर कालेज, डंडियामई इण्टर कालेज, सरस्वती बालिका इण्टर कालेज, ज्ञानदीप सी. सेकेण्ड़री स्कूल, ब्राइट स्कालर्स अकेडमी सिरसागंज, इन्दिरा मैमोरियल सी.सेकेण्डरी स्कूल, विद्यालयों ने जनपदीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाणपत्र व एक लेखनी दी गई।

प्रहलाद राय टिकमानी, शिकोहाबाद व ब्राइट स्कालर्स अकेडमी, सिरसागंज ने सभी प्रश्नों का सही उत्तर देकर प्रथम स्थान हासिल किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री अरविन्द तिवारी ने विजेता टीम को चल बैजयन्ती प्रदान की।

विशेष तौर पर कुमार अभिषेक ने सबसे अधिक प्रश्नों का उत्तर सही दिया और इस कारण वह जनपदीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता में शामिल किये गये तथा व्यक्तिगत पुरस्कार को जीतने में भी सफल रहे।

कार्यक्रम में शामिल ग्रामीण अंचल से आयी डंडियामई इण्टर कालेज की टीम आगे नहीं बढ़ सकी। यद्यपि प्रश्नमंच का उद्देश्य किसी भी छात्र के ज्ञान का मूल्यांकन करना नहीं है, परन्तु कहीं न कहीं ग्रामीण स्तर पर इन छात्र–छात्राओं को उपलब्ध करायी जा रही शिक्षा पर यह एक प्रश्नचिन्ह् भी है।

प्रश्नमंच में सरस्वती, ब्राइट स्कालर्स रहे विजेता

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में छात्रों ने दिखायी प

जनपदीय प्रश्नमंच (इण्टरमीडिएट स्तर) में प्रथम आने वाली दोनों टीमों का चल बैजयन्ती एवं पुरस्कार के साथ समूह छायांकन।

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

जनपदस्तरीय प्रश्नमंच

(स्नातकोत्तर स्तर)

स्नातकोत्तर जनपदस्तरीय प्रश्नमंच का आयोजन नारायण महाविद्यालय में किया गया। इसमें नारायण महाविद्यालय, शान्ति देवी आहूजा महाविद्यालय, चौ. रघुवरदयाल महाविद्यालय, ओम् डिग्री कालेज ने जनपदीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मंजर–उलवासै एवं डा. महेश आलोक ने किया। प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण पत्र व एक लेखनी दी गई।

नारायण महाविद्यालय ने आश्चर्य चकित करते हुये पूछे गये सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया और प्रथम स्थान हासिल किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री उमाशंकर शर्मा व मुख्य अतिथि, प्रभारी प्राचार्य, नारायण महाविद्यालय एवं डा. ए. के. आहूजा ने विजेता टीम को चल बैजयन्ती प्रदान की।

विशेष तौर पर कुमारी प्रेमलता ने सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया और इस कारण वह जनपदीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता में शामिल किये गये व्यक्तिगत पुरस्कार को जीतने में भी सफल रहीं।

ओम् डिग्री कालेज जो कि ग्रामीण अंचल से आता है ने पांच में से दो प्रश्नों का सही उत्तर दिया। इस विद्यालय की छात्रा कु. कुन्ती के अच्छे प्रदर्शन के कारण ओम् डिग्री कालेज द्वितीय स्थान पर रहा।

चल बैजयंती पर एनडी कॉलेज का कब्जा

जनपदीय स्तरीय प्रश्नमंच आयोजित

प्रथम आने वाली टीम का चल बैजयन्ती एवं पुरस्कार के साथ समूह छायांकन।

शिल्पा वेलकर की चित्रकला प्रदर्शनी

शब्दम् द्वारा प्रायोजित शिल्पा गौतम वेलकर द्वारा कमलनयन बजाज आर्ट गैलरी में 10 से 15 मार्च 2014 तक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट द्वारा शिक्षित शिल्पा वेलकर ने देश–विदेश के विभिन्न कोनों में अपनी कला के माध्यम से जगह बनाई। शिल्पा वेलकर ने जीवन के हर पहलू को कैनवास पर रंगो से जीवन्त किया। इन्हें जीवन्त कला के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सन् 1989 में सर जे.जे. ऑफ स्कूल आफ आर्ट द्वारा मायो पुरस्कार व 1991 में श्री जे.जे. स्कूल ऑर्फ आर्ट द्वारा ग्लेडस्टोन सोलोमन पुरस्कार मुख्य है। इन्हें सन् 1989 में सिटीबैंक पुरस्कार, 1981 में आर्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया द्वारा अद्वितीय कला कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया। सन् 1987 में एआईएफएसीएस द्वारा भी नई दिल्ली में सम्मानित किया गया।

शिल्पा वेलकर एक सफल चित्रकार के साथ–साथ मुम्बई के प्रसिद्ध कैम्पियन विद्यालय में हस्तकला का प्रशिक्षण मौलिकता से देती हैं।

शिल्पा वेलकर का हरित कलश भेंट कर स्वागत करतीं श्रीमती पूजा बजाज।

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराउं गली-गली
रामनवमी उत्सव

शब्दम् संस्था द्वारा रामनवमी की पूर्व संध्या पर आयोजित 'रामनाम के हीरेमोती मैं बिखराउं गली–गली' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में हिन्द लैम्पस् चेयरमैन एवं शब्दम् के वरिष्ठ सदस्य श्री शेखर बजाज उपस्थित थे। कार्यक्रम में बुंदेलखण्ड़ के प्रसिद्ध रामगायक जगदीश धर्मक, प्रकाश धर्मक एवं विनायक झा ने अपनी आवाज से मंत्रमुग्ध कर दिया। ''दे हमको शीतल वाणी हे माता शारदे'' सरस्वती वन्दना के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। शीर्षक गीत ''राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराउं गली–गली'' व ''सीता जी के राम'' गीतों के साथ सभा में उपस्थित श्रोतागणों को रामधुन में डुबो दिया। ''रि दुनियां खेलों न आंख मिचोली'' ने संस्कृति भवन में उपस्थित सभी श्रोतागणों की आंखों को नम

कलाकारों को हरित कलश भेंट करते बजाज इलैक्ट्रिकल्स के चेयरमेन श्री शेखर बजाज।

कर दिया। कार्यक्रम में ''मेघ मल्हार'', 'घूंघट के पट खोल री' गीतों ने बुंदेलखण्ड लोक शैली का परिचय दिया। अन्त में ''पायो जी मैंने रामरतन धन पायो'' और देवी मां के ऊपर 'लोंग मिर्च की बारी' गीत से कार्यक्रम का समापन किया। तत्पश्चात् सभी श्रोता रामनवमी के प्रसाद एवम् राम भजन के आनंद में विभोर हो गये।

गायन करते कलाकार श्री जगदीश धर्मक।

कलाकारों के साथ बजाज इलैक्ट्रिकल्स के चेयरमेन श्री शेखर बजाज एवं शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज।

कार्यक्रम के अंत में समूह छायांकन में उपस्थित, कलाकार एवं प्रमुख लोग।

कार्यक्रम में उपस्थित श्रोतागण।

गीता जयन्ती
(आधुनिक जीवन में गीता का महत्व)

गीता जयन्ती के अवसर पर 'आधुनिक जीवन में गीता का महत्व' विषय पर आचार्य चक्रपाणि द्वारा प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में प्रवचन के साथ–साथ जिज्ञासु श्रोताओं द्वारा आचार्य चक्रपाणि से गीता सम्बन्धित प्रश्न भी पूछे गए।

आचार्य चक्रपाणि जी पूर्णतः धर्म के लिए समर्पित होकर भागवत् कथा करते हैं। मूलतः नेपाली ब्राह्मण हैं, परन्तु वर्ष का अधिकतर समय देवनगरी बद्रीनाथ–केदारनाथ में व्यतीत करते हैं। सांसारिक माया–मोह एवं प्रलोभनों से दूर आपका उद्देश्य जनमानस को भगवान से जोड़ना है। भोजन में आप किसी प्रकार का अन्न और नमक का सेवन नहीं करते हैं।

कार्यक्रम में गीता पर प्रकाश डालते हुये आचार्य चक्रपाणि ने कहा कि गीता का प्रथम धर्म और अन्तिम शब्द मम है। आचार्य चक्रपाणि ने बताया कि पूरे गीता में 700 श्लोकों में भगवान के केवल दो बार ददामि शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है कि "मैं देता हूँ" अर्थात् भगवान कहना चाहते हैं कि मैं आपको बुद्धियोग

गीता जयन्ती के अवसर पर प्रवचन देते आचार्य चक्रपाणि।

और आँखे देता हूँ, जिससे पूरे विश्व को भगवान रूप में देख सकें तथा बुद्धि के माध्यम से आप भगवान से जुड़ सकें।

आचार्य चक्रपाणि जी ने कहा कि पूरी गीता सुनाने के बाद भी भगवान ने यह नहीं कहा कि तुमको करना ही पड़ेगा। चाहो तो मानो या न मानो।

विषय ''आधुनिक जीवन में गीता का महत्व'' पर कहते हुए कहा कि पूरी गीता केवल कर्म करने के बारे में कहती है, आप जो भी हैं जहां पर भी हैं, केवल और केवल अपना कर्म करें फल की इच्छा प्रभु कृष्ण पर छोड़ दें।

चक्रपाणि जी ने बताया कि कलयुग में एक नाम का राक्षस 'मैं' है, अगर मनुष्य 'मैं' पर नियंत्रण कर ले, तो उसकी समस्याओं का अंत स्वयं हो सकता है।

कार्यक्रम में उपस्थित समूह, विशेषतौर पर बच्चों को सम्बोधित करते हुए श्री चक्रपाणि जी ने कहा कि हमें कर्म और धर्म दोनों के अर्थ को समझना होगा। धार्मिक होने का अर्थ यह नहीं है कि हम अपना कर्म करना

श्रोताओं का ज्ञानवर्धन करते आचार्य चक्रपाणि।

बंद कर दें, अर्थात् यदि भोजन सामने है और हम प्रार्थना करें कि भोजन हमारे मुंह में चला जाए यह सम्भव नहीं होगा, इस प्रकार भोजन लेने के लिए कर्म करना आवश्यक है। इसी प्रकार कर्म करते समय धार्मिक रहने से मनुष्य अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित रहता है, अर्थात् हमें धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपने कर्म करने चाहिए।

कार्यक्रम में सलाहकार समिति के सदस्य श्री मंजर उल–वासै और श्री अरविन्द तिवारी ने भाग लिया।

''जीना'' जीवन की सबसे बड़ी कला है। अत: जीना सीखो और सीखने के लिए जियो।

– कमलनयन बजाज

बुद्धि के माध्यम से भगवान से जुड़ें: चक्रपाणि

शिकोहाबाद : गीता जयंती के शुभ अवसर पर 'आधुनिक जीवन में गीता का महत्व' विषय पर आचार्य चक्रपाणि ने प्रकाश डाला। इस दौरान प्रवचन के साथ-साथ जिज्ञासु श्रोताओं ने आचार्य चक्रपाणि से गीता संबंधित प्रश्न भी पूछे।

कार्यक्रम में गीता पर प्रकाश डालते हुये आचार्य चक्रपाणि ने कहा कि गीता का प्रथम धर्म और अन्तिम शब्दम् मम है। आचार्य चक्रपाणि ने बताया कि पूरे गीता में 700 श्लोकों में भगवान के केवल दो बार ददामि शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है कि मैं देता हूँ, अर्थात् भगवान कहना ... है कि मैं आपको बुद्धियोग और आखे ... पूरे विश्व को भगवान रूप में ... माध्यम से आप ... चक्रपाणि ... कहते हुए कहा कि पूरी गीता केवल करने के बारे में कहती है आप जो भी ... पर भी है केवल और केवल अपना ... फल की इच्छा प्रभु कृष्ण पर छोड़ ...

कार्यक्रम में सलाहकार समिति ... मंजर उल-वासै और अरविन्द ... लिया। हिन्द लैम्पस् से एस.के. ... शर्मा, मनोज कुलश्रेष्ठ, मनीश ... के. सिंह, अभय दीक्षित, ... ने भाग लिया।

श्री जमनालाल बजाज १२५ वीं जयन्ती

'शब्दम्' ने देश के प्रख्यात औद्योगिक घराने के संस्थापक जमनालाल बजाज की 125 वीं जयन्ती समारोह का शुभारम्भ जमनालाल बजाज के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया।

इस अवसर पर जमनालाल बजाज के जीवन पर छायांकित फीचर फिल्म का प्रदर्शन किया गया एवं 'जमनालाल बजाज जीवनी' पुस्तक का विमोचन किया गया। श्री जमनालाल बजाज की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री उदयप्रताप सिंह ने कहा कि जमनालाल बजाज ने सामाजिक, राजनीतिक एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अनूठा कार्य किया एवं गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को समाज में प्रसारित कर देश की समस्याओं के निदान में अपनी अहम् भूमिका निभाई ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि जमनालाल बजाज के आर्दशों को अपने जवीन में उतारना होगा। जिससे स्वयं और समाज दोनों का भला हो सके। उन्होंने जमनालाल जी के जमाने में उनके द्वारा दिए दान एवं सहयोग के प्रसंगों पर प्रकाश डाला।

जमनालाल बजाज की पौत्र वधु किरण बजाज ने कहा कि उन्होनें समाज के हर वर्ग के देशवासियों का आदर एवं सहयोग हासिल किया और उनके मन में भी देश

समूह छायांकन।

अरण्य के उद्घाटन का छायांकन।

विचार व्यक्त करतीं श्रीमती किरण बजाज।

प्रेम की अलख जगाई। नारी को उन्होनें समान दर्जा दिया और शिक्षा के क्षेत्र में—स्कूल, महिलाश्रम आदि खोले और उन्हें भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

इस तरह से स्वतन्त्रता के लिए आवश्यक सारे आयामों का विवेकपूर्ण समन्वय कर समग्रता से काम करते रहे।

उनकी 125वीं जयंती पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण कर हम उनसे प्रेरित होने का संकल्प लेते हैं, साथ ही देश भक्ति में अपनी क्षमतानुसार कार्य करने का प्रयास करेंगे, जिसकी देश को परम आवश्यकता है।

हिन्दलैम्पस् क्वालिटी विभाग के सहायक महाप्रबन्धक श्री श्यामकृष्ण शर्मा ने जमनालाल बजाज द्वारा व्यापार करने के लिए बताए गए 15 बिन्दुओं प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इससे प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने जीवन में किस प्रकार इन नियमों का पालन करते हुए, सफल व्यापार किया जा सकता है। इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। जमनालाल बजाज किस प्रकार नियमों का पालन करते हुए भी सफल व्यापार किया जा सकता है।

1. जब तक पढ़ न लो, किसी कागज पर कभी दस्तखत न करो।

2. सिर्फ इस उम्मीद पर कि मुनाफा होगा, कभी पैसे की जोखम न उठाओ।

3. कभी इनकार करने से न डरो, अपनी बात को मानवाने की ताकत हर उस आदमी में होनी चाहिए, जो जीवन में सफलता चाहता है।

4. जो अनजान हैं, उनसे सावधानी के साथ व्यवहार करो, यह नहीं कि उनसे सशंक रहो।

5. व्यवसाय के मामले में हमेशा साफ सच्चे—बेलाग—और बेदाग रहो, और हर चीज को लिखावट में रखो।

6. किसी के जामिन बनने से पहले, उसे अच्छी तरह जान लो।

7. एक—एक पाई का पक्का हिसाब रक्खो।

8. वक्त के पाबन्द रहो, जब जिससे मिलना हो, उसे उसी वक्त मिलो।

9. जितना कर सकते हो, उससे ज्यादा की उम्मीद न दिलाओ।

10. सच्चे बनो, इसलिए नहीं कि इसीमें

फायदा है।

11. जो कुछ करना है, आज ही कर लो।

12. सफलता का ही विचार करो, उसीकी बातें करो, और तुम देखोगे कि तुम सफल होते हो ।

13. शरीर और आत्मा की अपनी ताकत पर ही भरोसा रक्खो।

14. कड़ी मेहनत से कभी न शरमाओ।

15. साफ बात कहने में संकोच मत करो।

नारायण महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनि कुमार यमदग्नि ने कहा कि मूल्यों और आदर्शों से अपना व्यवसाय करने वाले जमनालाल बजाज आज के परिप्रेक्ष्य में अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि उनके विचारों से प्रेरित होकर वह स्वयं 2012 में एक छात्र को शोध के लिए प्रेरित किया और नारायण महाविद्यालय का यह छात्र आज जमनालाल बजाज का राजनैतिक एवं सामाजिक आन्दोलन में योगदान विषय पर शोध कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम में नगर के गणमान्य व्यक्ति,

पत्रकार वार्ता में जमनालाल के विचारों को प्रसारित करते।

जमनालाल अरण्य उद्घाटन का समूह छायांकन।

उपस्थित प्रबुद्ध श्रोतागण।

कथनी–करनी एक सी

जब हम स्वतन्त्रता संग्राम के स्तंभों को याद करते हैं तो एक नाम उभर कर सामने आता है, जो पूर्ण सत्य–निष्ठा, दृढ़ निश्चय, गहन एवं व्यापक योगदान, तथा 'कथनी–करनी एक सी' को चरितार्थ करने के लिए जाना जाता है और वह हैं–जमनालाल बजाज।

एक ऐसे व्यक्ति, जिन्होंने 17 वर्ष की अल्पायु में परिवार की संपत्ति पर अपना दावा त्याग दिया था एक ऐसे अनोखे व्यापारी, जो स्वतंत्रता के आंदोलन के समर्थन के लिए ब्रिटिश कोप के सहर्ष भागी बने, ऐसे एकमात्र व्यक्ति, जिन्होंने ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और राय बहादुर की पदवियों को त्याग दिया और ब्रिटिश अधिकारियों के सामने झुकने से इनकार कर दिया; सामाजिक परिवर्तन के एक ऐसे अग्रदूत, जिन्होंने सुधार की शुरुआत स्वयं अपने परिवार से की, एक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी, जिन्होंने जेल की अपनी लंबी यात्राओं से 'सी' श्रेणी का कैदी होना चुना, ऐसे थे जमनालाल बजाज.....बल्कि इससे भी कहीं अधिक!

श्री जमनालाल जी का जन्म 04 नवम्बर 1889 में राजस्थान के सीकर जिले के कासी–का–बास गांव में हुआ था। 04 वर्ष की अल्पआयु में सेठ बच्छराज बजाज ने उन्हें गोद लिया एवं 13 वर्ष की उम्र में उनका विवाह 08 वर्ष की जानकीदेवी से हो गया। उन दिनों बाल विवाह का बहुत ज्यादा प्रचलन था, बाद में जमनालाल और जानकीदेवी दोनों ने जीवनभर इस समाजिक बुराई को मिटाने के लिए अथक कार्य किया।

बाल्यावस्था से ही जमनालाल, ऐशोआराम और अमीरी के बीच रहते हुए भी, भोग विलासपूर्ण जीवन से विमुख थे, राष्ट्रवाद की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी, वे लोकमान्य तिलक के समाचार पत्र 'हिन्द केसरी' के पाठक थे और 13 वर्ष की उम्र में ही अपना जेब खर्च बचाकर उसमें दान भी दिया था। बड़े होने पर जमनालाल गांधी जी की दक्षिण अफ्रीका की गतिविधियों में रुचि लेने लगे और जब गांधी जी भारत लौटे तो उन्होंने गांधी जी से संपर्क साधा, बाद में गांधी जी को वर्धा अपनी कर्मभूमि बनाने के लिए मनाने में वे सफल भी हुए, उन्होंने गांधी जी को सेवाग्राम में अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों के लिए काफी जमीन अर्पित की।

1920 में जमनालाल जी ने अपना वर्धा वाला घर– 'बजाजवाड़ी' –स्वतंत्रता आंदोलन के उपयोग के लिए अर्पित कर दिया, जल्द ही गॉधीजी ने उन्हें अपने ''पॉचवें पुत्र'' के रूप में स्वीकार किया। स्वयं गॉधी जी के शब्दों में ''जमनालाल जी ने निःसंकोच अपने आप को और अपना सबकुछ समर्पण कर दिया, मेरी शायद ही कोई ऐसी गतिविधि होगी, जिसमें मुझे अनका मुक्त सहयोग नहीं मिला हो और जिसमें वह बहुमूल्य सिद्ध न हुआ हो....उन्होंने अपनी विशाल संपदा मुझे समर्पित कर दी और ये सब उन्होंने जनहित

के लिया किया''।

20 वर्ष से अधिक समय तक, जमनालाल बजाज ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शीर्ष नेता के रूप में कार्य किया। कांग्रेस के कोषाध्यक्ष के रूप में उन्होंने सत्यनिष्ठा से विशाल कोष का प्रबंधन किया, उन्होंने चितरंजन दास, लाला लाजपराय, मोतीलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, खान अब्दुल गफ्फार खान, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, सी. राजगोपालाचारी, राजेन्द्रप्रसाद, सुभाषचंद्र बोस एवं सरोजिनी नायडू आदि के साथ निकटता से काम किया।

जमनालाल छुआछूत के प्रचलन से बहुत व्यथित थे, अपनी अंतर्आत्मा की आवाज सुनते हुए सन 1929 में अपने पारिवारिक लक्ष्मीनारायण मंदिर के द्वार दलितों के लिए खोल दिए थे। दलितों के लिए भारत में खोला जाने वाला यह पहला मंदिर था। उसके बाद उन्होंने इसके पास के कुएं को भी दलितों के लिए खोल दिया तथा अपना खाना बनाने और परोसने के लिए एक दलित रसोईया भी रखा। ऐसे 'क्रांतिकारी' कदम के लिए उन्हें अपने समाज का प्रकोप भी झेलना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।

स्त्रियों की दुर्दशा उनके लिए एक बड़ी चिन्ता का विषय था। उन्होंने अपने घर–परिवार से शुरूआत करते हुए पर्दा, दहेज तथा स्त्रिओं के प्रति अन्य सामाजिक अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई, वर्धा में उन्होंने जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानियों की पत्नियों के लिए महिलाश्रम की स्थापना की, शिक्षा के जरिए स्त्रियों के सशक्तिकरण हेतु उनकी अथक कोशिशों का यह जीता–जागता प्रमाण हैं, उन्होंने अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज को भी समर्थ बनाया, जिन्होंने उनके स्वर्गवास के बाद महिला सशक्तिकरण, 'गोसेवा' और खादी के कार्य को आगे बढ़ाया।

मूलतः एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने के कारण जमनालाल जी के स्वभाव में तपस्वी प्रवृत्ति विद्यमान थी, इसी प्रवृत्ति ने उन्हें महर्षि रमण , श्री अरविन्द, माता आनंदमयी, संत तुकडोजी जैसे महान संतों की संगति में आने के लिए प्रवृत्त किया, उन्हीं के अनुरोध पर 20वीं सदी के सबसे महान श्रृषि–विनोबा भावे ने वर्धा को अपना निवास स्थान बनाया, उन्होंने पवनार का अपना बंगला और उससे लगी जमीन, विनोबा जी के आश्रम के लिए समर्पित कर दी।

जमनालाल जी के व्यक्तित्व व योगदान के अनुरूप भारत सरकार ने 1960 में उनका एक स्मारक डाक टिकट जारी किया और 1990 में उनके जन्मशती वर्ष को आधिकारिक रूप में मनाकर उनकी स्मृति को सम्मानित किया।

वर्ष 2014 जमनालाल जी का 125 वां जयंतीवर्ष है, दरअसल इसे हम देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले सभी महान आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के रूप में मना रहे हैं। आज जब सामजिक, राजनैतिक और राष्ट्रीय जीवन बहुत ही प्रदूषित हो चुका है, ऐसे समय में देश पर न्यौछावर होने वालों के जीवन से प्रेरणा लेना नितांत आवश्यक है।

युगीन काव्या

विगत दो दशकों से काव्या परिवार पूरी मेहनत, लगन और ईमानदारी से 'युगीन काव्या' को अपने पाठकों तक पहुँचाता रहा है। सिर्फ कविता को समर्पित हिन्दी की यह छोटी–सी पत्रिका अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक दायित्वों को बखूबी निभाती रही है। युगीन काव्या का साठवाँ अंक, एक विशेषांक के रूप में अपने पाठकों तक पहुँचा रहे हैं।

इस अंक में दिवंगत हिंदी कवियों को याद किया गया है, जिन्होंने मुम्बई महानगर में जीवन यापन करते हुए अपनी प्रतिभा से काव्य जगत को समृद्ध किया है। इंदीवर, अंजान, शैलेन्द्र, पं0 भरत व्यास आदि की प्रतिभा सिनेमा में जितनी विकसित हुई, उतनी शुद्ध कविता के क्षेत्र में नहीं हुई। जबकि पंडित प्रदीप, पंडित वसंत देव, पंडित नरेंद्र शर्मा आदि ने सिनेमा और साहित्य को समान रूप में साधा। इस शहर में कई प्राध्यापक कवि हुए, कई पेशेवर कवि, तो कई फक्कड़ कवि।

इस अंक को तैयार करने में यथासंभव सावधानी बरती गई है। काव्या परिवार ने इस पर अथक परिश्रम किया है। शब्दम् को उनके सहयोग और सौजन्य का अवसर मिला इसके लिए शब्दम् सदैव आभारी रहेगा।

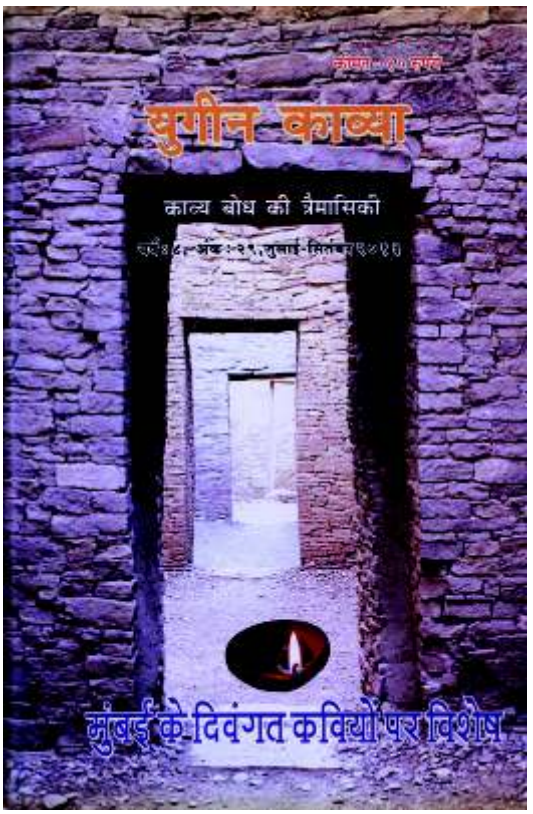

हमारे गुणों का सुवास और ज्ञान का प्रकाश उस हद तक फैलता है जिस हद तक हम स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदि संकुचित भावों से दूर रहें।

– कमलनयन बजाज

'युगीन काव्या' की कुछ कविताएं-

दिव्यता दे माँ मुझे मैं गगन का तारा बनूँ
राष्ट्र-हित जीऊँ-मरूँ मैं धवल-ध्रुव तारा बनूँ
मैं नहीं अन्याय-अत्याचार के आगे झुकूँ
हो न कोई अशुभ मेरा विश्व का प्यारा बनूँ॥
चापलूसी कभी कोई कवि किसी की क्यों करे
शारदा का पुत्र रहकर ही सदा जीया करे।
चार दिन जीना जगत में स्वाभिमानी बन जियें
काल दस्तक पर दे जब शान से ही वो मरे॥

-मोहनलाल गुप्ता

अपनी धरती अपना ही आकाश पैदा कर
अपनी मेहनत से नया इतिहास पैदा कर
माँगने से कब मदद मिलती अरे भिक्षुक
अपनी हर इक श्वास में विश्वास पैदा कर

चल पड़ा जो चीर कर अन्धेर है
राह में जो रुकता नहीं वह शेर है
जब तक जलता रहे अंगार है
बुझ गया तो राख का एक ढेर है

तू खुद अपने पाँवों को हिम्मत का बल दे
उठा अपना सर और आगे को चल दे
कहाँ पूछता फिर रहा अपनी 'ज्योतिष'
ग्रहों का जो डर तो ग्रहों को बदल दे

– पं. भरत व्यास

ढह रहे हैं सारे
ताश के महल आओ चलें खोजें
आदमी असल आदमी
मिलावटी सामान हो गया देशी
शराब की दुकान हो गया
कर रहे हैं आम भी
बबूल की नकल
राज और नीति में मेल है कहाँ
सारा कुछ पैसों का खेल है
यहाँ गल रहे हैं सारे
मोम के महल
चोर चापलूस की चाँदी यहाँ
खादी है उनके बचाव में यहाँ
खिल रहे हैं रेत में
रात को कमल

-सच्चिदानंद सिंह 'समीर'

सम्मतियां

शब्दम् के एक दशक पूरे हुए। यह हमारे लिए संतोष और गर्व की बात है।

जो उपलब्धियां हुईं उनके लिए प्रसन्नता है, जो उपलब्धियां करनी हैं उनके लिए उत्साह भी है क्योंकि जनता और आप सबका निरन्तर सहयोग मिला।

आप सभी जानते हैं कि हम एक भयानक युग से गुजर रहे हैं। पिछले 50 वर्षों में जल–थल सभी का राजनीतिकरण हो गया है। हमारी संस्था इनके मानवीकरण में विश्वास करती है।

हम उसी दिशा में बढ़ने का प्रयत्न करते हैं। जो लोग साथ आ जाते हैं उन्हें आभार, जिन्होंने अभी तक नहीं सुना है उनको हम पुकार रहे हैं।

आज आदमी श्वांस लेने की मशीन हो गया है। साहित्य–संगीत और कला का प्रयास, ह्रदय को सम्पन्न बनाना है।

–नन्दलाल पाठक

शब्दम् एक अत्यंत समाजहितकारी संस्था है। जिसमें साहित्य –संगीत –कला और सामाजिक जीवन को परिष्कृत करने, संरक्षण करने और संर्वधन करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संस्था के दस वर्ष पूरे होने पर मैं संस्था, संस्था की सर्वेसर्वा और आत्मा श्रीमती किरण बजाज, शेखर बजाज और उनके सहयोगियों एवं टीम को बधाई एवं साधुवाद देता हूँ। श्रीमती किरण बजाज की समाज और देश के प्रति प्रतिबद्धता और परोपकार की भावना की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

इस अवसर पर मेरी अनन्त शुभकामनाएं हैं और भविष्य में यह संस्था अपनी सफलता एवं सार्थकता को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सिद्ध करके दिखाएगी।

–उदयप्रताप सिंह

'शब्दम्' ने अपने एक दशक पूरे किए। साहित्य–संगीत–कला के संवर्धन में संस्था की भूमिका प्रशंसनीय रही। हिन्द की धरा से प्रस्फुटित बीज विदेश में भी अपनी छाप छोड़ने में सफल रहा।

किरण की साहित्यिक अभिरुचि एवं संस्कृति के प्रति उसके समर्पण ने 'शब्दम' को नई ऊंचाई दी।

'शब्दम्' की इस एक दशक की यात्रा में साहित्य–संगीत–कला के क्षेत्र में जो उपलब्धियां मिली, उससे उत्साह मिला परन्तु इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ करना शेष है।

'शब्दम्' अपने कार्यक्रमों द्वारा नई पीढ़ी को संस्कृति के संस्कार का भाव प्रसार करते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है।

मैं न्यासी एवं सलाहकार मंडल के सम्मानित सदस्यों को उनके सतत् योगदान के लिए बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। संस्था से जुड़े शुभचिंतको एवं कार्यकताओं को भी बधाई देता हूँ।

इस अवसर पर मैं शब्दम् को शुभकामनाएं देते हुए कामना करता हूँ कि भविष्य में यह संस्था हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति के प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभाएगी।

-शेखर बजाज, वरिष्ठ सदस्य

किसी भी देश की संस्कृति अपनी अभिव्यक्ति पाती है अपने साहित्य में, संगीत, कला तथा पर्व और त्योहारों में। इन सभी विधाओं को समर्पित संस्था शब्दम् बहिन श्रीमती किरण बजाज के सुसंस्कारित चिन्तन से प्रादुर्भूत होकर अब से दस वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई। तब से लगातार इन्हीं की प्रेरणा और दिशा निर्देशन में 'शब्दम' पूरी चेतना एवं प्राणवान कार्यक्रमों के द्वारा समाज को, विशेष रूप से नई पीढ़ी को, प्रारम्भ से ही सुसंस्कारित करके राष्ट्रसेवा के अपने दायित्वों का निर्वाह कर रही है। इस संस्था की दसवीं वार्षिकी प्रकाशित होने जा रही है। मेरी इस संस्था की सतत प्रगति के लिये मंगल कामना।

-उमाशंकर शर्मा, विशिष्ट सलाहकार

यदि हमारा ध्येय निश्चित और विचार स्पष्ट हों तो आवश्यकतानुसार अलग-अलग क्षेत्र में, अलग-अलग कामों के लिए सभी पद्धतियों का लाभ लिया जा सकता है।

- कमलनयन बजाज

ये अत्यन्त हर्ष का विषय है। साहित्य, संगीत एवं कला को समर्पित संस्था शब्दम् अपने स्थापना के दस वर्ष पूर्ण कर समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह्न में पूर्णतय सफल रहा है। इस सफलता का श्रेय सामान्य रूप से इसकी सलाहकार समिति एवं विशेष रूप से इसकी अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज के सतत् लगन, कड़ी मेहनत एवं उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्व को जाता है। मैं शब्दम् के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ। शुभकामनाओं सहित।

-डॉ. ओमप्रकाश सिंह, विशिष्ट सलाहकार

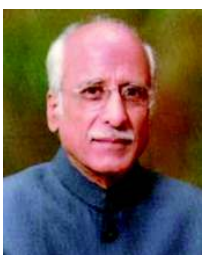

यह जानकर अंत्यत हर्ष हुआ कि 'शब्दम्' संस्था की अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज इसके दस वर्ष पूर्ण होने पर हिन्दी भाषा को उसका वास्तविक स्थान दिला कर उसे राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयास में रत हैं। श्रीमती किरण बजाज का सम्बल पाकर संस्था विविध साहित्यिक संस्थानों में हिन्दी शब्द ज्ञान को बढ़ावा देने हेतु ''हिन्दी प्रश्न मंच' तथा गावों में ''ग्रामीण कवि सम्मेलन'' आयोजित करती रहती है।

मैं श्रीमती किरण बजाज का उनके इन्हीं गुणों के कारण बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। मुंबई महानगर की चहल-पहल और रौनक छोड़ कर शिकोहाबाद जैसे ग्रामीण अंचल में आकर हिन्दी भाषा को गौरवान्वित करने जैसे महान कार्य को पूर्णता प्रदान करने में

लगी हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके इस निष्काम कर्म को आगे बढ़ाने का साहस और धैर्य को सम्बल प्रदान करें।

-डा. ए.के. आहूजा, विशिष्ट सलाहकार

'शब्दम्' ने भारतीय संस्कृति और प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करते हुए, दृढ़ संकल्प शक्ति और अक्षय ऊर्जा का प्रमाण देते हुए अपनी दस वर्ष के किशोर वय में ही प्रौढ़ सर्जनात्मक एवं रचनात्मक शक्ति अर्जित कर ली है। साहित्य, संगीत और कला की त्रिवेणी में संवेदनात्मक स्नान करके जो आत्मिक तृप्ति प्राप्त होती है, उसे शब्दों में निबद्ध करना लगभग असंभव है। इस पूरी प्रक्रिया का सजग सहयात्री बनाने के लिये 'शब्दम्' अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज को बहुत–बहुत धन्यवाद!

डॉ. महेश आलोक, विशिष्ट सलाहकार

'शब्दम्' के दस वर्ष अपनी बेमिसाल उपलब्धियों के साथ आपके स्नेहिल संरक्षण में पूरे हुए।

संस्कृति और प्रकृति की संरक्षण में आपमें जुनून के हद तक संकल्पित प्रयास में हम एक हिस्से के रूप में जुड़ कर 'शब्दम्' को अनन्त तक देखना चाहते हैं।

मां की ममता पाख ज्ञानी,
मां की जिसने कद्र न जानी,
वो नर है शैतान रे पगले,
मां है गंगा जल का पानी।

-डा. रजनी यादव, विशिष्ट सलाहकार

'शब्दम्' ने अपनी स्थापना की दस–वर्षीय यात्रा में जो अनेक पड़ाव पार किये, वे सब मील के पत्थर हैं। वर्षानुवर्ष सादगी और भव्यता के सामंजस्य युक्त कार्यक्रमों की गुणात्मक अभिवृद्धि और वैविध्य के साथ रुचि–परिष्कार इसकी महती उपलब्धि है। ज़मीन से सर्वाधिक रूप से जुड़े कार्यक्रम 'प्रश्नमंच' के द्वारा शिक्षा जगत की युवा पीढ़ी के लिए व्यावहारिक रूप से लाभप्रद होने और अनेकानेक प्रतिभागियों तक पहुँचने के कारण 'शब्दम्' को सर्वाधिक स्तरीय लोकप्रियता इस दशक में प्राप्त हुई है। मेरी दृष्टि में यह 'शब्दम्' की सर्वोच्च उपलब्धि रही है।

अपने दूसरे दशक में 'शब्दम' नित नयी ऊंचाइयों को छुए, इस मंगलकामना के साथ,

-मंजर-उल वासै, विशिष्ट सलाहकार

'शब्दम्' का सान्निध्य मिला, प्रतिभाएँ सँवर गईं।
शब्द ब्रह्म है इसीलिए, व्यंजनाएँ निखर गईं।
एक दशक पहले 'किरण' ने रोपा था बिरवा,
उस बिरवे से इन्द्रधनुषी, रश्मियाँ बिखर गईं।

-अरविन्द तिवारी, विशिष्ट सलाहकार

हिंदी के प्रति मेरे अनुराग का कारण यह है कि यह एक ऐसी भाषा है जिसमें राष्ट्रभाषा बनने की शक्ति है।

– जमनालाल बजाज

जुड़कर 'शब्दम्' से मुझे,
मिला अत्यधिक हर्ष
यही कामना है सुखद,
हो इसका उत्कर्ष
संगीत–कला–साहित्य का,
शब्दम् है पर्याय
अभी हुए दस वर्ष बस,
आगे हों शत् वर्ष

– **डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया**

विविधा

सम्मान

डा. महेश आलोक

डा0महेश आलोक को विश्वविद्यालय स्तरीय साहित्यकार सम्मान प्रदान करते उ0प्र0हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह, भारत भारती सम्मान से सम्मानित प्रख्यात कथाकार डा0 दूधनाथ सिंह एवं उ0प्र0हिन्दी संस्थान के निदेशक डा0 सुधाकर अदीब

साहित्य की विविध विधाओं से अनुप्रेरित डॉ. महेश आलोक के रचनात्मक व्यवहार जगत और सृजन–कर्म में से किसी एक को प्राथमिक मानना सहज नहीं है। शोधपरक गंभीर साहित्य रचने के साथ ही व अनवरत देशभर में शैक्षिक सम्मेलनों, कार्यशालाओं, अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवादों, विश्ववेद सम्मेलन आदि में सक्रिय रहे हैं। वस्तुतः डा. महेश आलोक दसवें दशक की समकालीन हिन्दी कविता के चर्चित कवि एवं आलोचक हैं।

देश के जाने–माने साहित्यकार प्रो. केदारनाथ सिंह के निर्देशन में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से 'समकालीन भारतीय साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ' विषय पर शोध किया है। सम्प्रति वह नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश (डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा से सम्बद्ध) में एसोसिएट प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं।

28 जून, 1961 को गोरखपुर में जन्मे डॉ. महेश आलोक का वास्तविक नाम डॉ. महेशचंद्र चौधरी है। प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार रघुवीर सहाय, कथाकार शिवप्रसाद सिंह, नृत्यविद् बिरजू महाराज और एम.के. रैना, उत्तरा बावकर आदि के आलोचनापरक साक्षात्कार उनकी विशिष्ट उपलब्धियों में उल्लेखनीय हैं। देश की प्रतिष्ठान हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में उनके डेढ़ सौ से अधिक गंभीर लेख प्रकाशित हैं। 'कविता दशक' में उनकी भी रचना संकलित है। इसके अतिरिक्त मराठी, उर्दू और पंजाबी भाषाओं में भी उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ है। –'चलो कुछ खेल जैसा खेलें' (कविता संग्रह), 'नयी कविता की भूमिका' (आलोचना); 'कृष्णा सोबती का कथा साहित्य'; (आलोचना), भीष्म साहनी का कथा साहित्य (आलोचना) आदि उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं। साथ ही, 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'आलोचना का पूर्वार्द्ध', 'समीक्षा के बहाने' आदि उनकी प्रकाशनाधीन पुस्तकें हैं।

डॉ. महेश आलोक अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी मंच पर सक्रिय 'शब्दम्' संस्था द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान' से सम्मानित हैं। डॉ. आलोक शोधमाला परामर्शदात्री समिति, शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य भी हैं।

उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के साथ हिन्दी भाषा में अनवरत रचनात्मक लेखन हेतु डॉ. महेश आलोक को वर्ष 2013 के 'विश्वविद्यालय–स्तरीय सम्मान' से उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने सम्मानित किया। शब्दम् संस्था डा. महेश आलोक के सम्मान पर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती है।

श्री अरविन्द तिवारी

आप प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त होकर स्वतंत्र लेखन के लिए पूर्णतया समर्पित हैं। आपके प्रकाशित व्यंग्य संग्रह हैं। चुनाव टिकट और ब्रह्माजी; दीवार पर लोकतंत्र; राजनीति में पेटवाद; मानवीय मंत्रालय, नल से निकला सांप; मंत्री की बिंदी। आपने दो व्यंग्य उपन्यास भी लिखे हैं– दीया तले अंधेरा; शेष अगले अंक में; दैनिक नवज्योति; जयपुर में दो वर्षों तक; गई भैंस पानी में शीर्षक से आपने दैनिक व्यंग्य स्तंभ लिखा जो काफी लोकप्रिय हुआ। आप मासिक पत्रिका शिविरा का संपादन भी कर चुके हैं। इस वर्ष आपको साहित्य के क्षेत्र में दो पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

'नल से निकला सांप' व्यंग्य संग्रह के लिए आपको सिद्धनाथ कुमार स्मृति सम्मान, स्पेनिन संस्था द्वारा दिया गया। 21वां आर्य स्मृति साहित्य सम्मान, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा आपके भारतीय कार्यालयों की व्यवस्थाओं पर रोचक व्यंग्य उपन्यास 'हेड ऑफिस के गिरगिट' के लिए दिया गया।

भारत के सामने कई जटिल प्रश्न हैं। इनमें से कोई भी एक इतना भयंकर हो सकता है, जिससे सारा देश ही एक विकट प्रश्न बन जाय। देश में क्या और कैसी समस्याएं है, यह प्रश्न गौण है। उनको हल करने के लिए हमारे पास शक्ति और नेतृत्व कैसा है, इसमें उसका जवाब निहित है।

– कमलनयन बजाज

पं. नरेन्द्र शर्मा जन्मशती-वर्ष

२८ फरवरी १९१३ को जहांगीरपुर (उ.प्र.) में जन्मे पं. नरेन्द्र शर्मा उच्चकोटि के कवि, गीतकार, पत्रकार, लेखक थे। छायावाद से लेकर प्रगतिशील, आध्यात्मिक, दार्शनिक, राष्ट्रवादी काव्य में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। खण्डकाव्य भी लिखा, कथाकाव्य भी। आकाशवाणी में 'विविध भारती' के तो वह जनक ही थे। जन्मशती– वर्ष में उनकी दो रचनाओं के माध्यम से 'शब्दम्' की स्मरणांजलि।

अथ स्वागतम् शुभ स्वागतम्
आनंद मंगल मंगलम्
नित प्रियं भारत भारतम्

नित्य निरंतरता नवता
मानवता समता ममता
सारथी साथ मनोरथ का
जो अनिवार नहीं थमता
संकल्प अविजित अभिमतम्
आनंद मंगल मंगलम्

कुसुमित नयी कामनाएं
सुरक्षित नयी साधनाएं
मैत्री मत क्रीडांगन में
प्रमुदित बंधु भावनाएं
शाश्वत सुविक्षित अतिशुभम्
आनंद मंगल मंगलम्

एशियाई खेलों का स्वागत गीत
जिसे पं.रविशंकर ने संगीतबद्ध किया।

ऐसे हैं सुख सपन हमारे
बन बन कर मिट जाते जैसे
बालू के घर नदी किनारे
ऐसे हैं सुख सपन हमारे.....

लहरें आतीं, बह-बह जातीं
रेखाएं बस रह-रह जातीं
जाते पल को कौन पुकारे
ऐसे हैं सुख सपन हमारे.....

ऐसी इन सपनों की माया
जल पर जैसे चाँद की छाया
चाँद किसी के हाथ न आया
चाहे जितना हाथ पसारे
ऐसे हैं सुख सपन हमारे.....

मुंबई के आर्टिस्ट सेंटर में 'प्रफुल्लित' का आयोजन

गीतिका ने अपनी तीसरी एकल प्रदर्शनी **'प्रफुल्लित'** आर्टिस्ट सेंटर मुंबई में प्रस्तुत की। उन्होंने यह प्रदर्शनी अपनी पथ प्रदर्शक व सुप्रसिद्ध चित्रकार प्रफुल्ला दहाणुकर की स्मृति को समर्पित की।

सन् 2005 में 'लीफ़ कलेक्शन' नाम से पहली प्रदर्शनी कमलनयन बजाज आर्ट गैलरी में और **'शेड्स ऑफ नेचर'** नामक दूसरी प्रदर्शनी जहॉगीर आर्ट गैलरी में 2010 में आयोजित की।

प्रकृति से गीतिका को हमेशा प्रेरणा मिली है। 'प्रफुल्लित' के पीछे गीतिका की भावना थी कि इससे मुंबई निवासियों में प्रकृति के प्रति संवेदना को बढ़ावा मिलेगा।

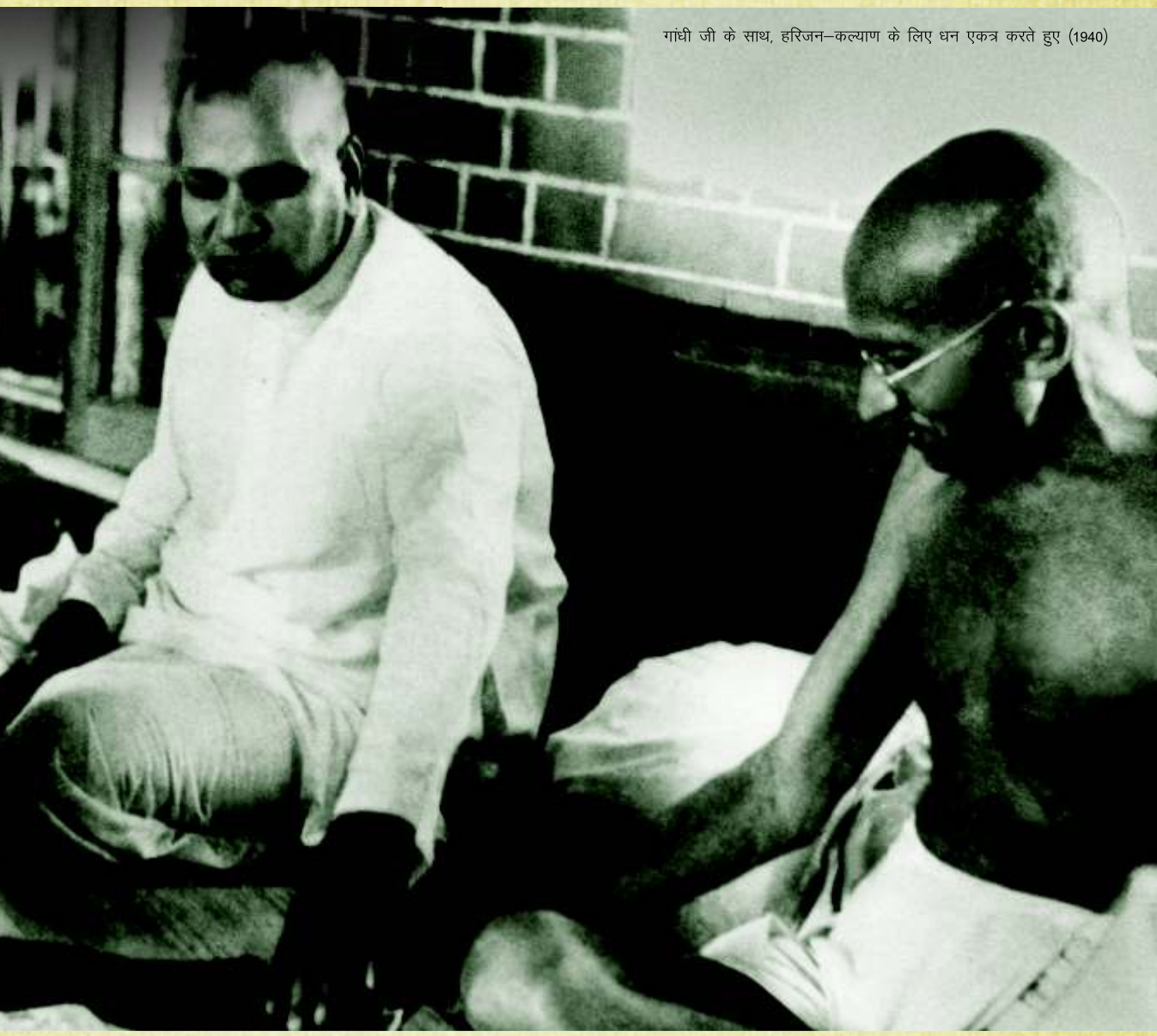

गांधी जी के साथ, हरिजन–कल्याण के लिए धन एकत्र करते हुए (1940)

"सचाई व ईमानदारी
व्यापार में सफलता
के मजबूत स्तंभ हैं"

—जमनालाल बजाज